ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

मई 2024 / वर्ष 8, अंक-2

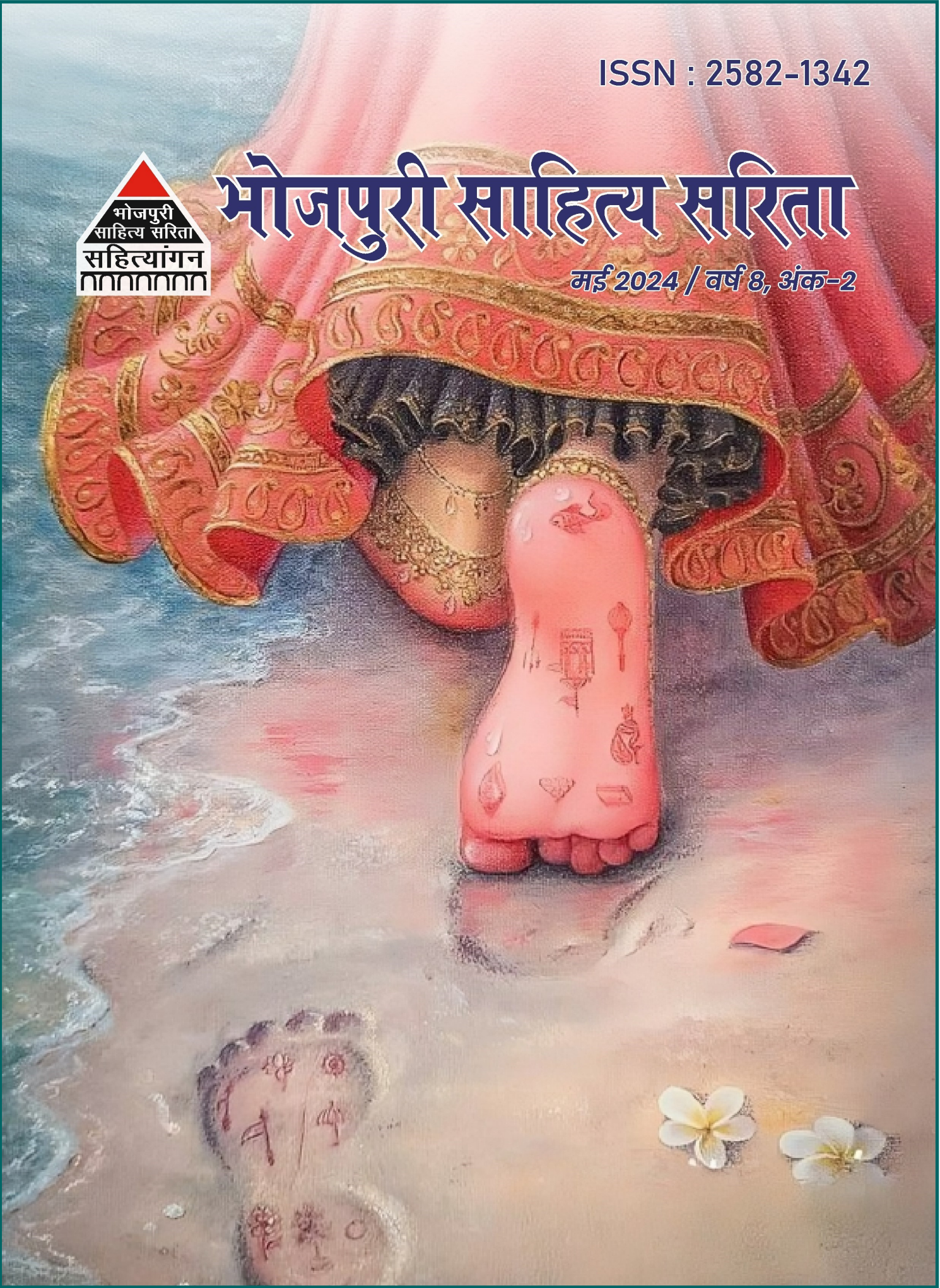

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

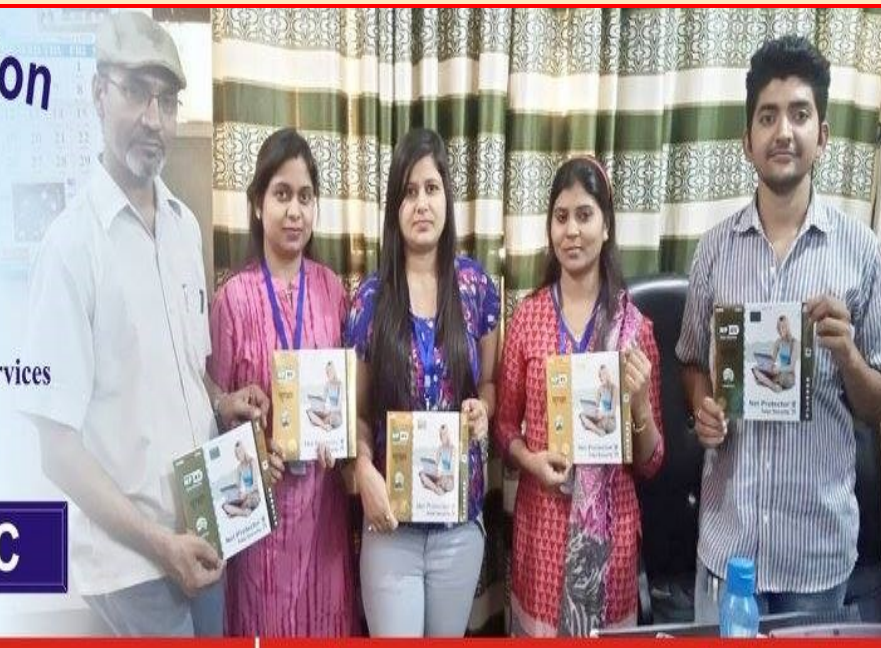

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

मन के बात–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/5

धरोहर

काँची अमिया न तुरिहऽ– विद्यानिवास मिश्र/6

आलेख/शोध लेख/निबंध

कन्हैया के कहानी के किरदार–कनक किशोर/10–12
लहरि लहरि से चुन के गीत बनावेला केहू: माहेश्वर तिवारी – डॉ सुनील कुमार पाठक /18–23

समीक्षा/पुस्तक चर्चा

सुघर आलोचक के सुघर कृति–
कनक किशोर /30–34
पिया परबोधी के बहाने तुलसी
गाथा–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /42–44

संस्मरण/स्मृति आख्यान

थाप आ अलाप -जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /41–42

राधा धुन

राधा– केशव मोहन पाण्डेय /38–39

कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

तरकुल–कथा– दिनेश पाण्डेय /24–26
कंवल के फूल–गीता चौबे 'गूंज'/27–29
जिद पर जीत– डॉ रजनी रंजन /35–36
खोज–आशा रानी लाल /39—41

कविता/गीत/गजल

अदिमी के ईगो– मनु लक्ष्मी मिश्रा/7
नवगीत– अनिल ओझा 'नीरद'/7
का चाही आउर - जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /8
देहात– सविता गुप्ता/8
विष्णु भगवान के दशावतार सोहर -कृष्ण कुमार /9
चंद्रेश्वर के दू गो भोजपुरी कविता - चंद्रेश्वर/13–15
गीत–शिवजी पाण्डेय 'रसराज'/15
बाबा हो बाबा पुकारिले–शशि रंजन मिश्रा/16
छूट जाला–योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/16
जागऽ चक्र सुदर्शन धारी - डॉ सुनील कुमार उपाध्याय/17
कइसे धरीं धीर–देवेन्द्र कुमार राय/17
कहवाँ भुलाइल देसवा–डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव /23
आँसू बहावे लागल–अभियंता सौरभ कुमार /29
प्रकृति–राकेश कुमार तिवारी /29
सारिका भूषण के दू गो कविता–सारिका भूषण /34
माई से बिछुरल लइका के देखनी ह-स्नेहा मिश्रा/37
अरमान दिल के - दीपक तिवारी/37
रामदरश मिश्र जी के
तीन गो गीत - राम दरश मिश्र/45

बेगर लाग लपेट के

बिलारी के भागे क सिकहर–
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 46

■■

मन के बात

साहित्यो में मन के बात त होखही के चाही। एही से एह अंक में अपना मन के बात हम सोझा रख रहल बानी। एगो संपादक के अनुभव आ मन के पीड़ा के कुछ ऐसे समुझल जा सकेला कि ' जाके पाँव ना फटी बेवाई, से का जाने पीर पराई।' इहों कुछ अइसने पीर बा।भोजपुरी साहित्य के लेखन,सम्पादन, प्रकाशन के समय–समय पर लोग अंगुरी देखावत रहेला। एकरा दुख से दुखी होत रहेला, बाकिर कवनो उताजोग करे खातिर ना सोचे। एकरा पाछे अंगुरी दे खावे वाला लोगन के मानसिकता का रहेला, उ साँचो में विमर्श के बात बा। नेंव के ईंट बने खातिर क लोग बा, उहो लोग अंगुरिये पर गिनाला। संस्था,संस्थान भा समरपन के क घरी ले बाट जोहउवल होखे, इहो विमर्श के बहरा अभियो ले नइखे निकसल। आजु के लोग जरूरत जेयादा बेवसायिक हो चुकल बा। उहाँ लोग बस अपना कइलका के मूल्य से मतलब रहेला। इहाँ भोजपुरी में मानदेय, सुनते काठ मार देला। मने कहलको के लोग मजाक बुझेला। अइसन बुझलको के गलत त नहिए कहल जा सकेला। बाकिर आपन बात त उहें के उहें रहि गइल, नेंव के ईंट बने ला का कवनो दोसरा ग्रह से लोग त ना नु आई। एह खातिर अपनही समाज के अगुवा बने के पड़ी। भोजपुरिया सामर्थ्य के डंका के लोहा सगरी दुनिया मनले बा आ अजुवो मान रहल बा। एह बाति के सभेले लमहर उदाहरन मारीशस दुनिया के सोझा बा। हाले में उहाँ भइल भोजपुरी सम्मेलन के गूंज सगरी दुनिया सुनलस ह।उहाँ दुनिया के कोने–कोने से भोजपुरिया लोगन के जुटान भइल रहल ह। ढेर कुछ सार्थक बतकही उहाँ भइलो होखी। सम्मेलन के सभेले उजियार पक्ष सम्मेलन में राष्ट्रपति आ प्रधानमंत्री के उपस्थिति के मानल जा रहल बा। मने अपना भाषा के हलुक नजर से देखे वाला लोग के सोचे के चाही। संगही इहो ओतने साँच बा कि 'एगो रहिला से भाड़ ना फूटत' बाकिर एक आ एक इग्यारहो होला, इहो धियान में राखिके चलला के काम बा।

एह अंक के संपादकीय में ई बात उठावे के एगो मकसद बा। मकसद ई कि पत्रिका के गति बनल रहो, एकरा खातिर समाज से सहयोग के बिना गति के बना के आगु बढ़ल संभव नइखे। पत्रिका सगरे भोजपुरिया समाज के बा। लगातार सार्थक कामो हो रहल बा।अइसना में 2–4 लोग से कुछ नइखे होखे वाला। एहमें सभे के सहजोग के आवश्यकता बा। अब ई बात बस कहे भर के नइखे, एहके महसूसे के जरूरत बा आ आगु बढिके हाथ बटावे के समय आ चुकल बा।एकमात्र साहित्यिक मासिक पत्रिका असमय काल के गाल में समा जाय, ई त रउवो सभे के नीमन ना लागी।

पछिला हर अंक लेखा इहो अंक अपना में ढेर कुछ समेटले बा। हर अंक अपना में बेहतर सामग्री समेटले सोझा आवेला। भोजपुरी साहित्यकारन के सहजोगे से ई संभव हो पावेला। भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार आपन लय बनवले साहित्य के बढ़न्ति में जतना संभव बा करे के परयास में लागल बा। यति गति के आपन रंग होला, आपन पौरुष होला, आपन वितान होला, ओहु से सभे परभावित हो जाला, त हमनिए के कइसे बाचब। तबो परयास बा कि कुछ नीमन होखे, एही सोच का संगे पत्रिका के अंक रउरा सभे के सोझा परोसा रहल बा। जय भोजपुरी !!

■■

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

काँची अमिया ना तूरिहऽ

काँची अमिया ना तूरिहऽ बलमु काँची अमिया
मोरे टिकोरवा न रसवा पगल हो
हियरा में गँठुली न अबले जगल हो
मोरे सुगापंखी सरिया के कुसुमी मजीठिया में
राँची धनिया न बोरिहऽ बलमु राँची धनिया
काँची अमिया न तूरिहऽ बलमु काँची अमिया

मोरे अमिअरिया में मोजरा न अइले हो
डरियन –डरियन पतवा ललइले हो
चोरिया आ चोरिया जो लगले टिकोरवा
जाँची बतिया न छुइहऽ बलमु जाँची बतिया
काँची अमिया न तूरिहऽ बलमु काँची अमिया ।

पुरुवा में लसिया के गिरलें टिकोरवा
बाँवे जो गइले ई दखिना पवनवा
मोजरा के गीतिया त कोइली सुनवली
साँची बतियो ना पूछिहऽ बलमु साँची बतिया
काँची अमिया ना तूरिहऽ बलमु काँची अमिया।

❑❑

विद्या निवास मिश्र

जन्मः 14 जनवरी 1926

मृत्यु : 14 फरवरी 2005

अदिमी के ईगो

मनु लक्ष्मी मिश्रा

अदिमी के ईगो का का न करावेला
समयवा के काटेला ,मनवा के भरमावेला ।
दूसरे का नीचा दिखवले में सुख पावेला
अदिमी के ईगो का का न करावेला।

अरे घियवा के बरतन आगि पर रखबा त
आगि के छुवन से टघरबे करी आउर
आगि दूबि (दूब–एक प्रकार की घास)के जरइबे करी
देहि के धरम इहे ह ,
त काहे के अतना बखेड़ा?
समय शक्ति के नाश करावेला
अदिमी के ईगो का का न करावेला।

मनवा के आंकुस में राखि के आपन कार करीं
अरे ई जिनगी एगो प्रयोगशाला ह
प्रयोक्ता मन के कबो न होला संतोष
नयापन हमेशा करे चाहेला ।
अरे अदिमी के ईगो का का न करावेला ।

❑❑

❍ मेरठ, (उ0 प्र0)

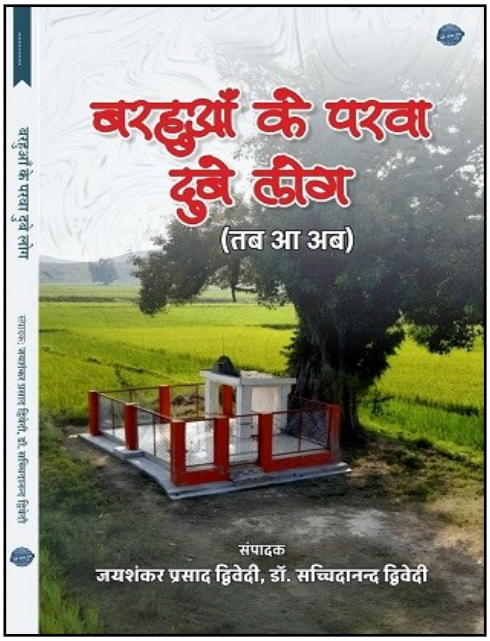

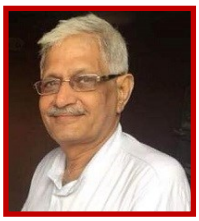

नवगीत

अनिल ओझा नीरद

आवऽ ना हिलि–मिलि के साथी,
करीं जा बीतल दिन के बात।
कहां कुलांचत दिन ऊ बीतल,
डूबि गइल रसवन्ती रात।।
करीं जा बीतल––––––––––।।

रहे जवानीं सिर चढ़ि बोलत,
बिजुरी अस दउरत रग–रग में।
हमरा–तोहरा,तोहरा–हमरा,
आगा के लउकत एह जग में।।
मन,पंछी बनि उड़त गगन में,
सुधि–बुधि बिसरवले दिन–रात।
करीं जा बीतल––––––––––।।

मीठ–मीठ चुपड़ल बतियनि के,
सुधि कहंवा,अन्जाम का होई?
होश कहां,सपना के दुनिया,के–
अन्तिम परिणाम का होई??
कइसन–कइसन रहे कल्पना,
मन के भीतर,आवत–जात।
करीं जा बीतल––––––––––।।

बनल घरौंदा बालू के जे,
समय झंकोरा छितरा दिहलसि।
दादी–नानी के कहनी अस,
तिनका–तिनका बिखरा दिहलसि।।
वर्तमान के चिन्ते नइखे,
भूत प होत, भविष्य के बात।
करीं जा बीतल दिन के बात।।

आवऽ ना हिलि–मिलि के साथी,
करीं जा बीतल दिन के बात।
कहां कुलांचत दिन ऊ भागल,
डूबि गइल रसवन्ती रात।।
करीं जा बीतल दिन के बात।।

❑❑

❍ कोलकाता, प0 बंगाल

का चाही आउर ?

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

छप्पन भोग ह उसिना चाउर,
का चाही आउर ?

रासन कै बोरिया पंजियावा
अगरम–बगरम किछहू गावा
एकरै के बस बूझा पाहुर।
का चाही आउर ?

मंहगइये से चटकल तारु
का जवान, नवही मेहरारू
खुन्नस में बस पियबा माहुर।
का चाही आउर ?

तूरत–थूरत गइलें लमहर
बांवे–दहिन छलांगत छरहर
नीको कमवाँ लागस बाउर।
का चाही आउर ?

खट–पट में कुछ उठा–पटक में
बातिन के कुछ खटक–अँटक में
कतिनो खुन्नस ढारत जाउर।
का चाही आउर ?

धोवल छांट–बघार सुखावल
अनमनता में भइल मनावल
सोझहीं मचल खाउर खाउर।
का चाही आउर ?

रगरा–झगरा मन फेरवट हौ
काशियो में काशी करवट हौ
बन्न करीं अब बमकल राउर।
का चाही आउर ?

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

देहात

सविता गुप्ता

आइल दिनवा पर्व के,जाइब आपन गाँव।
रहिया जोहत होइहें,बइठब उनकर छाँव।

माई बाबू संग में,पके मीठ पकवान।
मुँह में पानी आ गइल ,मालपुआ रसखान।

माटी चूल्हा ना जरी,किनब सिलेंडर एक।
दुखी नहीं अँखिया तबे,खुशी बरसी अनेक।

रोटी मकई के पके,अजब सोंन्ह मिठास।
लिपल पोतल दिवाल से,सुनर लागे निवास।

इनार भी मूँदा गइल,बदल गइल देहात।
लागे लागे ताश पर,दलान में दिन रात।

कॉपी,पेंसिल हाथ में,आइल टेबुल ,टूल।
लइकन सब इस्कूल में,पढ़ाई में मशगूल।

❑❑

❍ राँची (झारखंड)–834 010

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

विष्णु भगवान के दशावतार सोहर

कृष्ण कुमार

सब सखी मिली जशोदा रानी,
जमुना नहाये चलली हो।
ए ललना पीछवा से चललें कन्हैया,
कि हमहूँ नेहाये चलबि हो।

बोलिया त बोलेली जसोदा रानी,
सुनी बबुआ कृष्णा जी हो।
ए बबुआ जमुना में बडुए घोघरवा,
घोघरवा डेरवावेला हो।

ए अम्मा कइलस हवें घोघरा के रूप
घोघरवा देखे हमहुँ चलबि हो।।

मीन ही रूप जब धइनीं ,
त जल में समइनि नु हो।
ए अम्मा चारों वेद जल से निकलनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।

ए अम्मा कइसन हवें, घोघरा के रूप
घोघरवा देखे हमहुं चलबि हो...2---

कच्छप रूप जब धइनी,
त समुद्र के मथनी नु हो।।
ए अम्मा चौदह रतन निकलनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।।

ए अम्मा कइसन हवें , घोघरा के रूप
घोघरवा देखें हमु चलबि हो।।

बराह रुप जब धइनी,
पताल में समइनी नु हो।।
ए अम्मा जल पर पृथ्वी बसवनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।

ए अम्मा कइसन हवें, घोघरा के रुप
घोघरवा देखे हमु चलबि हो।।

प्रशुराम रुप जब धइनी,
त छत्री के मरनी नु हो।।
ए अम्मा छत्री–अछत्रिणि कई दिहनि,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।

ए अम्मा कइसन हवें, घोघरा के रुप
घोघरवा देखे हमहुँ चलबि हो।।

बावन रुप जब धइनी,
तब बलि द्वारे गइनी नु हो।।

ए अम्मा तीनो लोक तीनो डेग नपनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।।

ए अम्मा कइसन हवें, घोघरा के रुप
घोघरवा देखे हमहुँ चलबि हो।।

नरसिंह रुप जब धइनी,
हिरण्यक शिपु के मरनी नु हो।
ए अम्मा भक्त प्रहलाद के बचवनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।।

ए अम्मा कइसन हवें, घोघरा के रुप
घोघरवा देखे हमहुँ चलबि हो।

राम ही रुप जब धइनी,
त लंका के जरनी नु हो।।
ए अम्मा रावण मारी गढ़वा लिहनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।

कृष्ण ही रुप जब धइनी ,
त रउवा घरवा अइनी नु हो।
ए अम्मा रउवे आगे पुतना के मरनी,
घोघरवा नाहीं देखिला हो।।
ए अम्मा कइसन हवें ...2--- --

बुद्ध ही रुप जब धइनी,
त अजन घरे जनम लेनी हो।।
ए अम्मा हथवा में लेनी मरजनी,
त रहिया बहारत रहनी हो।
ए अम्मा कइसन हवें ...2--- --

कलकि रुप जब धरबि,
त कलजुग में जनम लेबि हो।
ए अम्मा घोड़वा प होखबि सवार,
त पापिन के नाश करबि हो...2---
ए अम्मा कइसन हवें...2---

बोलिया त बोलेली जशोदा रानी,
सुनीं बबुआ कृष्णा जी हो।
ए बबुआ राउर महिमा अगम बा आपरवा,
घोघरवा कुछु चीज नाहीं हो...2---

❑❑

महावीर स्थान के निकट,
करमन टोला,
आरा–802301(बिहार)

कन्हैया के कहानी के किरदार

कनक किशोर

कहानी सेसर ना होखे बलुक कहानी के किरदार कहानी में अपना दुख, दरद, संघर्ष आ हिम्मत से कहानी के ऊ रूप देला जे कहानी के जीवंत बना देला आ कहानी के एगो विशेष पहचान देला जे ओकरा के सेसर कहानियन में उचित स्थान के हकदार बनावेला। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह बहुआयामी व्यक्तित्व के भोजपुरी रचनाकार रहीं जे भोजपुरी के हर विधा में आपन जोरदार उपस्थिति अपना लेखनी के बल दर्ज कइले बानीं। चौधरी जी के कथा संसार काफी विस्तृत बा। करीब एक सई से अधिका भोजपुरी कहानी रचले बानीं। 'बड़प्पन', 'सही मंजिल'

आ ' बेगुनाह ' तीन गो कहानी संग्रह के अलावा आरोही रचनावली भाग 1 में उहां के अधिकांश कहानी संकलित बाड़ी स। कुछ पत्र – पत्रिका में इहां – उहां बिखरल पड़ल बा। चौधरी जी अपना कहानियन में बसल अधिकांश किरदार के अइसन चित्र उकेरले बानीं जे हमनीं के बीच के जिनिगी से संघर्ष करत मनई ह।ऊ सब किरदार उहां के कहा. नियन में जीवंत होके आपन जिंदगी के हर मोड़ पर आपन संघर्ष के कथा खुद बयान करत दिखाई पड़त बा। अगर रउवा चौधरी जी किरदारन से मिले के होखे त बेसी ना बस चौधरी जी के कथा संसार में घुसके पन्ना उलट – पलट लीं। अपना गाँव – घर – टोला – कस्बा – शहर में उहां के किरदार के खोजब त राह चलत भेंटा जाई। इहां तक कि अपना नितांत निजी व्यक्तित्वो के किरदार के रूप में अपना कहानी में शामिल कइले बानीं।एही से चौधरी जी के कहानी के कवनो पात्र अजनबी ना लागे। चौधरी जी अपना कहानी के किरदारन के अपना जिंदगी से खोज के निकलले बाड़न। चौधरी जी मानत रहीं कि हमार कहानी के पात्र के कथात्मक घटना आ अनुभव दूनों यथार्थ से जुड़ल रहेला। एकरा पीछे के मकसद ई बतावत रहीं कि एह तरह से समय आ समाज के स्वरूप पाठक के सामने आ पावेला।कबहूं त पाठक के लागेला कि एह कहानी के किरदार हमहीं त नइखीं। चौधरी जी के कहानियन के किरदारन के शिनाख्त करे खातिर उहां के विपुल कथा लेखन से गुजरे के होखी।चौधरी जी के पहचान उहां के कहानियन के कुछ विशेष किरदारन से बनल बा जेकरा में ' बड़प्पन ' के गनिया के नाम सबसे ऊपर बा।

चौधरी जी के कहानियन आ किरदार से रूबरू होखला के बाद ई कहल जा सकत बा कि अनेकन अइसन कहानी बाड़ी स जेकरा में सीधे – सीधे वर्तमान के आँखिन में आँखि डाल के आपन किरदारन के आधार भित्ति खड़ा कइले बानीं। चौधरी जी के अपना कहानी खातिर किरदार गढ़े के आपन तरिका रहे। स्मृति में बसल पात्रन के शब्द के जामा पहिरा कहानी में रख देत रहीं।एही दृष्टिकोण से चौधरी जी के किरदारन पर अलग से बतकही करे के बात दिमाग में आइल। दु ख–दर्द, यातना, विषमता अउर अभाव से भरल किरदारन के जीवन के अभिव्यक्ति देवे वाला कहा. नियन के यात्रा पर ध्यान देला पर ई बात साफ हो जाला कि किरदारन के संवाद कहानी के कमजोर नइखे पड़े देले आ अपना चरित्र के बल पर कहानी के सर्जनात्मक आयाम के गति प्रदान करि एगो रचनात्मक गरिमा देले बा जे कहानी आ किरदार के बोझिल नइखे बने देले। चौधरी के कहानी के भाषा में खुलापन बा।इहे खुलापन किरदार के कहानी के घटनन आ दृश्यन में बिखराव ना आवे देवे। इहां के कहानियन में बड़ा ही सधल अंदाज में किरदार कहानी के कथा सुत्र के पकड़ अपना के कहानी में रख कहानी के पूर्णता के ओर बढ़ावत मिल. ला।एहिजा हम चौधरी जी के अइसने कुछ किरदारन से मिलल – मिलावल चाहब। एह खातिर हम 'बड़प्पन' के गुनिया, 'देशद्रोही ' के अवध, 'चीख 'के रामाधार ,'सही मंजिल' के बाबूधन आ पियरिया, 'बेगुनाह' के भगत जइसन किरदार विशेष रूप से नाम लेल चाहब। चौधरी जी आपन कहानी के किरदार के पक्ष रखे खातिर हमनी बीच नइखीं बाकिर उहां के कहानी खुद आपन किरदार के तरफ से खड़ा बिया।ओह किरदारन के चौधरी जी के कथा के पन्ना के गंभीरता से पलट के किरदार के पहचान कइल विद्वान लोगिन जइसे सुरेश काँटक, जितेन्द्र कुमार, विष्णुदेव तिवारी, डॉ नीरज सिंह गवाह के रूप उपस्थित बाड़ें काहे कि उहें सभे के कथन आ कहानी के आधार पर कुछ मु ख्य किरदारन के चयनित कर सामने ले आवे के प्रयास इहां कइल गइल बा।

' देशद्रोही ' कहानी में सामंत मुखिया के दबाव से

दारोगा अवध के गिरफ्तार क लेता, थाना में ओकरा के शारीरिक यातना देता। सुन लीहीं ओकर बखान गाँव के मुखिया के मुँह से। ऊ दारोगा जी से कहत बा, ''आजाद मुलुक के हर आदमी बराबर होला । केहू केहू के बेगारी ना करे । मुसहरन के साँप मारि के खाये से मना करेला । राड़न (नीच जातियों) के दारू ताड़ी पीये से रोकेला । सफाई से रहे के कहेला । ओहनिये के ना, गाँव भर के आउरो दोसर राड़न (नीचन) के मिला के नक्सलाइट बना देले बा।'' अवध के चेतना आ निर्भीकता काबिले तारीफ बा जब ऊ दारोगा से कहता कि 'लोगन के न्याय, सत्य आ खुशीयाली के रास्ता बतावल कवनो अपराध ह का?' दारोगा आ अवध के संवाद में न्याय, सत्य आ दलित उद्धार के मूल्य स्थापित होत बा। सामंती अन्याय के खिलाफ कथाकार अवध जइसन सशक्त सामाजिक सरोकार वाला त्यागी, संघर्षशील, समझौता विहीन चरित्र गढ़ले बाड़न। एह कहानी में पुलिस तंत्र के भ्रष्टाचार, पतन आ सामंती सांठगाँढ स्वतः उजागर बा।

' चीख ' कहानी के कथा नायक रामाधार एगो सामाजिक एक्टिविस्ट ह। ऊ थाना, प्रखंड–अंचल, अनुमंडलाधिकारी, एस.पी., कलक्टर तक के गैर–कानूनी काम के प्रतिरोध करता। एह प्रतिरोध के कारण ऊ प्रशासन के आँख के किरकिरी भइल बा। ओकरा में क्रांतिकारी किसान आंदोलन से नया चेतना आइल बा। ऊ हरवाही–चरवाही नइखे करत। दस–बीस गो नवयुकन के संगठित कइके ठीकादारी से आजीविका अर्जित करत बा। गाँव के मुखिया जगतपति सिंह बाड़न। ऊ पूर्व जमींदार हवन। जमींदारी गइलो पर मुखियागिरी के रोब–दाब बा। प्रशासन से मधुर संबंध बा। उनकर बेटा जंगल के ठीकेदार बा। रामाधार मुखिया के चुनाव में उम्मीदवारी घोषित कइले बा। मुखिया जगतपति सिंह चिंता में बाड़न। उनकर ठीकेदार बेटा एगो साजिश के तहत मारपीट के केस में रामाधार के फँसावत बा। अतने ना संयुक्त परिवार के मालगुजारी के बकाया के वसूली के नोटिस रामाधार के नावें साजिशन जारी होता। बी.डी.ओ.,सी.ओ.,सहकारिता प्रसार पदाधिकारी, जमादार–हवलदार आ चार गो सिपाही रामाधार के दुआर पर जीप से उतरत बा। खींचतान–बहस आदि में सी.ओ. के आदेश से जमादार रामाधार के गोली मार देता। मुखिया जगतपति सिंह के राजनीतिक काँटा साफ हो गइल। प्रशासन के अन्याय से पाठक के मन बहुत विचलित होता। आजादी के चालीस साल बादो ना प्रशासन के चरित्र बदलल ना ग्राम–पंचायती व्यवस्था लागू होखे से जमींदारन के वर्चस्व खत्म भइल। सामाजिक यथार्थ के काला चेहरा उजागर करे में कथानायक रामाधार के जनपक्षधरता, ईमानदारी, तटस्थता, निर्भीकता साफ–साफ झलकत बा।

सही मंजिल' कहानी के किरदार बाबूधन, पियरिया आ गाँव के मुखिया नयी सामाजिक–राजनीतिक चेतना के प्रतीक बाडे आ छोटका मालिक आ उनुकर कुल्हि चमचा अधोगामी मरणशील सामंती के मूल्यन के प्रतीक बाड़न। कहानी के कथानक, परिवेश, कथ आदि किरदारन के सहज–संतुलित संवाद आ विमर्श से आपन मजबूत पहचान छोड़ले बा।

'बड़प्पन' के कथानायक गनिया सर्वहारा ह। कमा ला त खा ला। गरीबी में संवेदना, करुणा, दया, मनुष्यता सभ बचा के रखले बा। ऊ टमटम चालक बा। कथाकार बहुत कम शब्दन में गनिया जइसन संवेदनशील उदात्त चरित्र नायक के खड़ा कइले बाड़न। गनिया के चरित्र–चित्रण प्रेमचंदीय शिल्प में बा : 'गनिया स्वभाव के खरा ह। केहू के चुगली करे के हाल ना जाने।.... चरित्र के अच्छा आदमी ह। विश्वासघात करे के हाल ना जाने। गनिया के नजर में रोगी के ना जात होले ना ध रम। जवना तेजी से मुसलमान के घर जाला ओही तेजी से इसाई हिन्दुओ के घर।' साम्प्रदायिक संकीर्णता आ द्वेष भारतीय समाज के बहुत बड़ कमजोरी बा। गनिया में साम्प्रदायिक भेदभाव नइखे। ऊ अपना टमटम पर बइठा के एगो डॉक्टर के एगो मरणासन्न बच्चा के इलाज खातिर ले जाता। ऊ डॉक्टर के साथ एगो विमर्श में बा। ओकर दार्शनिक प्रश्न बा : 'डॉक्टर साहेब! रउआ भगवान पर विश्वास करींला कि ना ?' अइसन प्रश्न से पाठक चउंकता बाकी कथा के अंत में जब ऊ पढ़ता कि डॉक्टर मृत बच्चा के शरीर में इंजेक्सन लगा के ओकर अभिभावक से फीस ले लेलन आ टमटम चालक गनिया मृत बालक के अभिभावक से टमटम के भाड़ा ना लेलक तब पाठक के सामने दार्शनिक प्रश्न के अर्थ उजागर हो जाता। कथावाचक के कवनो टिप्पणी नइखे। कहानी के कसल शिल्प आ कथ्य के ई सबल पक्ष बा। सर्वहारा गनिया मनुष्यता, करुणा आ भाईचारा बचावत बा अपना चरित्र बल परय डॉक्टर मृत रोगी बालक के इंजेक्सन लगाके आ अभिभावक से फीस लेके अपना वर्ग के संवेदनहीनता के परिचय देता। गनिया मानवीय संवेदना से भरल – पूरल लेहाजी, विश्वासी आ चरित्रवान बा। धार्मिक सद्भावना से भरल बा आ सामाजिक ढकोसलन से कोशों दूर।

'बड़प्पन' के गनिया के चरित्र में हमनी के एगो अइसन मानवीय चेतनाा के दरसन होत बा, जे दुर्लभ भले मत होखे, विरल त जरूर बा। कहानी

सामान्य जन के भीतर के एगो असामान्य जन के बात करत ई बतावे के सफल जतन करत बिया कि इहे असामान्यता मनुष्यता के वर्ग चरित्र ह। । एमे बहुत ज्यादा माथा–पेचिस करे के जरूरत शायद नइखे कि पइसा के जरूरत केकरा ज्यादा रहे– ओकरा,जे अब ले उपास आ एगो छेदहिया पइसा से रहित रहे कि ओकरा, जेकर पेट आ चेट दूनो भरल रहे?आ पइसा कइसहूँ भा कवनो अधातम से सँहोथल जा सकत रहे? गनियो त पइसा ले सकत रहे! लोग देतो रहे।ओमे जोरो– जबरजस्ती के कवनो बात ना रहे। ओमे इहो बात ना रहे कि मुरदा आदमी के डॉक्टर से देखवावे ले आवे वाला टमटम वाला के आपन भाड़ा ना लेबे के चाहीं। माने– गनिया अपना टमटम के भाड़ा लेइयो लिहित तबो मनुष्यता के कवनो कानून के लंघन ना होइत। कहानीकार चाहित त कहानी में गनिया से ओकर भाड़ा लियवाइयो सकत रहे! डॉक्टर के द्वारा– आपन फीस लेत आ ओकरा के चेटिआवल त ऊ देखाइये चुकल रहे आ ओकरा (डॉक्टर के) के एगो व्यक्ति के रूप में, साथे–साथ एगो अइसन संस्था के प्रतिनिधि के रूप में–जेकरा के आजुओ लोग भगवान के बाद(वदसल दम•ज जव ळवक) पुनीत मानेला– घोर अमानवीय आ अघोर–पतितो सिद्ध क चुकल रहे! एह से कहानी के एकनिष्ठतो पर इचिकी भर के फरक ना परे के रहे। बाकिर ना, तब एगो गरीब टमटम वाला के चरित्र अन्हारे में रह जाइत। तब कहानी के शीर्षको बदल गइल रहित आ कहानी एगो डॉक्टर के हीनतई के दास्तान भर बन के रह गइल रहित जेकरा में से से मनुष्यता के सत्व– चमक आ गमक दूनो गायब। डॉ नीरज सिंह कहत बाड़े कि– ''गनिया के घोड़ा के चाबुक मारल एगो अमानवीय व्यवस्था के खिलाफ मानवीय करूणा सह आक्रोश के विस्फोट बा। ई चीज ओह दौर के हिन्दी कहानियन में भी आवे लागल रहे।'' गनिया के चरित्र के ऊँचाई पर पहुँचा के कहानीकार बे–लागलपेट के साफ क देत बा कि अब मानवता के बँचावे खातिर समाज के नेतृत्व गनिया जइसन मजदूरा लोगन के हाथ में, चाहे कह सकेलीं मजदूर प्रतिनिधि ायन के हाथ में दिहल जरूरी बा, जे आम जन– शोषित, गरीब जन के दुःख–पीर समझ सके, उनकर जहाँ ले सपरे मदद कर सके।

'बेगुनाह' कहानी के मुख्य किरदार भगत निहायत गरीब, बाप के छल–कपट के मारल भूमिहीन मनई बा। चकबंदी ऑफिस में अपना खेतन के बारे में पूछताछ के सिलसिला में ऊ ऑफिस के चतुर्थवर्गीय कर्मचारी से मारपीट क लेता। चकबंदी ऑफिसर थानेदार के सूचित क देता। थानेदार आ चकबंदी ऑफिसर के संवाद पुलिसतंत्र के कार्य–प्रणाली के उजागर करता : ''छूंछे चलान कइला पर तुरंते छूट जाई।। एगो देसी पिस्तौल आ दू–चार गो गोली मंगवा दीं। हम एकरे पास से रिकवरी दिखा देब। ओह से ऐक्ट लाग जाई।'' स्पष्ट बा कि नक्सलवादी आंदोलन के आड़ में कतने बेगुनाहन के फंसावल गइल। भगत के गरीबी के मार्मिक चित्रण बा कहानी में।

अपने समय के किरदारन के हिस्सा के संघर्ष चौधरी जी खुद देखले बाड़ें। सामंत आ शासन के यातना के पीर के मारल गरीब, भूमिहीन अवध आ रामाधार के संघर्षशील चरित समय के सांच रहे। एगो ना कई गांव के कहानी ह कि दबंग के प्रभाव में रात – बिरात पुलिस आ धमक कवनो बेगुनाह के पकड़ ले जाला आ फर्जी मुठभेड़ के शिकार बना देला। पुलिस के ई करतूत के नइखे जानत। सामंत आ पुलिस के गंठजोड़ से के वाकिफ नइखे।उन्हिन के पशुत्व के गवाही कवन दलित – पिछड़ा दखिन टोला नइखे देत। चौधरी के कहानियन में एह पर वाजिब चिंता कइल गइल बा। सर्वहारा के प्रतिनिधि गनिया के चरित्र बड़प्पन के पगड़ी बन्हले लोगिन के मुँह पर बरियार थप्पड़ बा। गनिया अपना चरित्र के बले कहानी के शीर्षक ' बड़प्पन ' के समय के अंतराल में बदल के ' गनिया ' कर देलस ई ओह किरदार के ताकत बता रहल बा। अइसन बहुत कम उदाहरण दोसरो भाषा में मिलेला। ऊपर जवन किरदार से मिलनीं जा ओकरा में कबीर के ' हम ' देखे के मिल रहल बा आ उहे हम ओह किरदारन के ऊ ऊंचाई देले बा जे ओकरा के अमर कर गइल बा।उहे ' हम ' कहानीकारो में रहे जे कथा नायक के अंदर पोषित कर देले बाड़न। चौधरी जी के कहानीयन के किरदार अपना हक – हुकूक के सुराज, जनतंत्र के बचाव में संघर्षरत लागल दिख ताड़न स। वाजिब चिंता खातिर संघर्षरत आ मानवता के पक्षधर चौधरी जी के किरदारन के चरित्र किरदारन में जान फूंक जिंदा पात्र में बदल देले बा। चौधरी साहब नइखन बाकिर समय से संवाद करत किरदार के कहानी में उचित स्थान देवे वाला कहानीकार के जरूरत आजुवो बा।हम अंत में इहे कहब कि –

जे कुछ रहे हमनी बीच जिंदा किरदार/उठ के आ गइल कन्हैया के कहानी में/ओकरे के शब्द रूप देके लिख देनीं जिंदा कहानी/जे अमर कर गइल/कहानी आ किरदार के/साथे कहानीकार के।

प्रसंग –

1 चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानिन के सामाजिक फलक – जितेन्द्र कुमार
2 आरोही जी की कहानियों में मानव मूल्यों की पहचान – सुरेश काँटक
3 भोजपुरी कहानी के बड़ होखे के पहचानः बड़प्पन – विष्णुदेव तिवारी

❑❑

❍ राँची, झारखंड
चलभाष – 9102246536

चंद्रेश्वर के दू गो भोजपुरी कविता

चंद्रेश्वर

एगो चिरई गोहार लगावत रहत रहे

हमनी अइसन नगर में
बसे खातिर रहली जा
सरापित
जेहवाँ सलीका के ना
बाँचल रहे
केवनो पड़ोस

सिरमौर बनि के रहे
जिनगी में
तटस्थता
बिना केवनो काम के

प्रतिरोध एह घरी
खलिसा एगो
रूप मानल जात रहे
मूर्खता के

जेकरा किछुओ भेंटा जात रहे
ऊहे मानल जात रहे
रसूखदार

पद पैरवी पुरस्कारे से
आँकल जात रहे
केवनो आदमी के

सरकारी संस्थानी
'साहित्यभूषण' के
उपाधिए
पहचान बनि गइल रहे
बड़हन साहित्यकार के

जे एक्को दिन क्लास में जाइ के
ना पढ़ावत रहे
ऊहे पावत रहे
शिक्षक शिरोमणि के
सम्मान

चरने चाँपल मानल जात रहे
केहू के सबसे बड़
काबिलियत

प्रतिभा पानी भरत रही स
नवहा कुबेरन के जाके
घरे–घरे
होइ के मजबूर

डर समाइल रहत रहे
पुरान पंचनो के
नेयाव में
गेहुअन साँप बनि के

ईमान के बात रहे
बहुत दूर के कौड़ी

न्यायाधीशो
घबराइल रहत रहे लोग
फैसला लिखे के पहिले

हिले लागत रहे
ओह लोग के कलम के नीब

थरथराए लागत रहे
ओह लोग के मेज

फाइल हवा में उड़ि के
हो जात रही स
गायब

रात–दिन एगो चिरई
लगावत रहत रहे
गोहार ..... ''खूँटा में मोर दाल बा!''
बाकी बढ़ई से ले के राजा तक
सभे चुप्पी मारि के
बइठल रहत रहे

ढेरखा ले पत्रकारो
भागत रहलन स
सच्चाई से
कोसहन दूर
घटना के असली तथ्यन से
केवनो मतलब ना रहि गइल रहे
ओहनी के

कतो केवनो सत्य के पच्छ में

ना देत रहे सुनाई
जय–जयकार
ऊ त कब के
चलि गइल रहे
खटिया उड़ास के कोमा में
केवनो हेठार के गाँव में
जहवाँ अब्बो सड़क
एगो सपना लेखा रहे

शहर के चौक बाजार में
खौफ त देखे
डोमा जी उस्ताद के
गजानन माधव मुक्तिबोध के कविता
'अँधेरे में' से निकलि के बहरी
दिने–दहाड़े मचावत रहे
गुंडई

ऊ एगो कायर समय रहे
जेवना घरी
केवनो गुंडा के गुंडा कहे से
बँचत रहे
शरीफ लोग
आ नवका रिवाज बनल जात रहे
केवनो ज्ञानिए–गुनी जन के
गुंडा कहे के

झूठ के डंका बाजत रहे
देश–दुनिया में

ओकरे तरफदारी में
निकलत रहे बैंडपार्टी
बाजत रहे शहनाई

जिनगी में यारी ना खलिसा
बाँचि गइल रहे दुश्मनी

भरोसा आ उम्मीद जइसन
सुन्नर शब्द बाँचल रहि गइल रहन स
खलिसा कवियन के
कविते में

आदमिए आदमी के
काट खाए खातिर
होखे लागत रहे
बेताब

दागदार होखे से
ना डरत रहे केहू
अब ईहे सब ते
अलंकरन बाँचल रहे
सभ्य कहाए वाला
लोगन खातिर
एह नयकी सभ्यता में !

शिकायत पेटी

कवि, तोहार दिमाग
खलिसा शिकायत पेटी ते
ना हो सके

कवि,तोहार हिरदा
खलिसा कुंठा के
कब्रिस्तान ते ना हो सके

कवि,तूँ हरमेस सूतल रहे ले
गाफिल रहे ले
गहिरारे नीन में
सपना देखत रहे ल`
ऊल–जलूल
अगड़म–बगड़म

तोहरा ते
अब ना रहि गइल
केवनो मउसम के इंतजार

पह फाटल आ बेर डूबल
तूँ नइख देखले
ढेर दिनन से

कवि, अब तोहार केवनो वास्ता
ना रहि गइल
सच्चाइयन से

तुहूँ अब
कराहत बाड़े
महाझूठ के
पहाड़ के नीचे
दबल बाड़े

कवि,तोहरा अब हरमेस
रहत बा तलाश
अवसर के,
पाला बदले में

नेता लोगन से,
रंग बदले में आगे बाड़े
गिरगिटवन से

तूँ सजा ना , बराबर चाहे ले
पुरस्कारे ––पुरस्कार
नोट के तकिया पे
सूतल चाहे ले
मुड़ी धइ के

जेकरा के गरियावल भा सरापल चाहे ले
ओकरे से गलबाँही करे ले

चूमल चाहे ले हाथ ऊहे
जेवन सनाइल बा खून से
तोहार शब्द डूबल रहत बा
एहघरी चमचई के
गाढ़ चाशनी में !

कवि,तूँ आपन हिरदा के पाट
करे किछु चाकर
तज दे ईरिखा आ द्वेष

निंदारस से तनिक उठे ऊपर
जाग कवि,देखे ते
तोहरा के गोहरावत बा
तोहरे समय
करुन स्वर में
ले के नाँव
तोहार .....

कवि, साँचो
शब्दन के संगत से
अब बनि जा पहरुआ
हो जा सावधान
एह समय के बहुते
जरूरत बा
तोहार ....!

❑❑

631/58, 'सुयश', ज्ञानविहार
कॉलोनी, कमता (फैजाबाद रोड)
–226028
लखनऊ

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

गीत

निमिया के गछिया जनि कटिह ए बाबा,
बाटे ओपर चिरईन बसेर हो।

गछिया के कटते चिरइया उड़ि जइहें हो,
कहाँ मिलिहें उनका के थेंग हो।

उपरा से धइ लिहें बाज निरदइया हो,
निचवा बहेलिया दिही बेधि हो।

चिरई के आस टूटी बनल बिसवास टूटी,
छुटि जाई प्रान अखड़ेर हो।

कतहीं न ममता पसारि पइहें पउवां हो,
छाइ जाई सगरे अन्हेर हो।

कहे 'रसराज 'एह दूनों के सँवरले पर,
जनिगी में हो पाई सबेर हो।

❑❑

बलिया,(30 प्र0)

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

बाबा हो बाबा पुकारिले ...

शशि रंजन मिश्र

बाबा ई त अनेत बा
हमनी के गाँव के इज्जत का रही
रवा पूज्य बानी बरामन हईं
आ नोकरी करब नहर के मुंशी के
पनिवट मालगुजारी काटब !
हमनी के जे रवा के ऊंचा पीढ़ा प बइठाईं जा
ओहिजे रवा मोढ़ा प बइठब
ना... ना... ई मरजाद के बात बा
राउरे ना हमनियों के बाप दादा के बात बा
आ नहर के नोकरी में कतना कमा लेब ?
लोग रवा के मुंशी कही
अरे तरे करी त कमइलो इज्जतवा गंवा देब !

ई बात धिक्कारी राउर हेतना जजिमान के
ओह लोग के औकात आ अभिमान के
नोकरी माने नोकर, केतना कमाइब
सैकड़न जजिमान...
दू–दू सेर सिधा में रवा अघाइब
छोड़ी हई नोकरी के फेर
हमनी के जियते ई ना होई अन्हेर
रवा बइठीं घरे आ इज्जत कमाईं
आसीस दिहत रहीं आ सिधा–पानी पाईं

बाबा मान गइले
नोकरी छोड़ जजिमनिका में लाग गइले ।
सतनारायन के पुजा ह, अमावस ह, पुरनमासी ह
बियाह ह, सराध ह
जजिमान से सिधा पावे लगले
चार कोस बनकट तीन कोस खनेट
दस कोस शिवपुर आ बीस कोस जगदीशपुर ले
कर्मकांडी कहाये लगले ।
लोगवा एगो आउर नाम देलस – गान्ही जी !
काहे से कि एह इज्जत कमाए खातिर
दांडी जतरा जीवन भर चलल
पेट के गिनती घरे बढ़ल
त ई जतरा कुछ अउरी बढ़ल
जजिमान के मरजाद बनत गइल
बाकि बाबा बबे रह गइले ।
आ अछात जिनगी में बस सिधा कमइले ।

उनकर जीवन भ के दांडी जतरा से निकलल नून
जजिमान के फइलावल जोंक जइसन
झूठ के मरजाद के गला देलस ।
काश ! बाबा आज रहते
ओह दांडी जतरा से चरचराइल गोड़ के
गुलाब जल से धो देतीं
दू सेर सिधा के साध पर
हमहूँ रो देतीं ।

❑❑

❍ राजापुरी, नई दिल्ली

छूट जाला

योगेन्द्र शर्मा "योगी"

गिरानी क साथी उठानी में छूट जाला
भरतै खलित्ता उफानी में छूट जाला
पतिया खोसात रहे जउने मड़ईया में
उ बनतै अटारी करानी में छूट जाला।

बरतन जब नवखर चुल्हानी में आवेला
थरिया पुरनका दलानी में छूट जाला
पचकल बटुइया आ झउसल करहिया ले
चम्मच कटोरी पलानी में छूट जाला।

भेद भाव जहवाँ न कबहूँ भुलाय आयल
ओहिजों सनेहिया नदानी में छूट जाला
पइसा के थाह से थहाय जाला रिस्ता जब
अचकै अँगुरिया गुमानी में छूट जाला।

कागज के नईया खेवइया के आस लिहे
बचपन जवानी के बानी में छूट जाला
"योगी" मुकद्दर मसोस मन मार सोचे
कचको बखरिया सयानी में छूट जाला।

गिरानी क साथी उठानी में छूट जाला
भरतै खलित्ता उफानी में छूट जाला।।

❑❑

❍ भीषमपुर,चकिया,चंदौली(उ0प्र0)

जागऽ चक्र सुदर्शन धारी

डा.सुनील कुमार उपाध्याय

हे गिरिधारी किसन मुरारी
जागऽ चक्र सुदर्शन धारी.....

1-कंस करेला सगरे पंगा
नाचत बा दुर्योधन नंगा
बीन अइले के विपदा टारी
जागऽ .....
2-जात –पात में सब अझुराईल
धर्म के बा देवार खिंचाईल
पगलाईल बा सब नर–नारी
जागऽ.....
3- धरम गुरु ना राह देखावे
लछुमन रेखा रोज मेंटावे
भारत माता बनल बेचारी
जागऽ.....
4-दुलम भईल बा दूध खखोरी
ना होला माखन के चोरी
गइयन पर आफत बा भारी
जागऽ.....

5-जमुना में बा जहर घोराईल
भोर परल ऊ,रोज नहाईल
लवना लागल कदम के डारी
जागऽ.....

6-पांचाली के चीर बढ़ईलऽ
उतरा के तू गरभ बचईलऽ
महिला भ्रुण पर धउरे आरी
जागऽ.....

7-दुशासन त सगरे बाड़े
मरजादा के मेंह उखाड़े
मित्र सुदामा करऽ बिचारी
जागऽ.....

8-हे मनमोहन दरस देखावऽ
जनम जनम के त्रास मेंटावऽ
मोर मुकुट पीताम्बर धारी
जागऽ.....

❑❑

पूर्व प्राचार्य,एल.पी.शाही कालेज पटना

कइसे धरीं धीर

देवेन्द्र कुमार राय

नीक होला जवन सभका खातीर
ओह के काहे घिनौना मान बइठेल,
जवन आसन बा त्याग तपस्या के
काहे मौत बिछौना के मान बइठेल।।

हम त जहरो पी के हरदम धीर धरीं
तनिए सा मिलल का तुं त अइंठेल,
विधना के रचल अनमोल भाव के
काहे खातीर बौना मानिके बइठेल।।

लीन बा जे करम कमाइ के तप में
ओकरा के सपनो में कबहीं तुर मति,
फुल फुलाइल मानवता के धाम के
जौनीगी भर कबहीं छोड़बि मति ।।

कल्पना से पावल बल घमण्ड होला
छन में लउकी आ छनही बिला जाई,
सदाचार के राहि चलिके जवन मिली
लोभ परदा डललो प उ भुला पाई।।

हर लोगवा हमरा से रहे डेराइल
देवेन्दर ना चलिह अइसन चाल,
खाली नीमन बेवहारन प भइया
फालतु के खाली मति बजइह गाल।।

छद्मी गली के बड़का घर में
कतनो सइंचब लमहर माल,
अइसन राहि प चलब जब तक
मिली बम बारुद अउरी बवाल।।

❑❑

ग्रामपो०–जमुआँव, थाना–पीरो,
जिला–भोजपुर, बिहार,802159)

लहरि-लहरि से चुनि के गीत बनावेला केहू :माहेश्वर तिवारी

डॉ. सुनील कुमार पाठक

हिन्दी के कवनों शिखर– कवि जब भोजपुरी में आपन कलम चलावेला त ई एगो फरजनिभाई भर ना होखे। बलुक ई एगो आत्मविश्वास आ उदग्रीव घोषणा होला एह बात के कि लोको भाषा में आज के समय आ समाज के अझुरहट ,जटिलता,कुटिलता आ चुनौतियन के उकेरे के भरपूर क्षमता आ काबिलियत बा।माहेश्वर तिवारी आज एह धरा–धाम के छोड़ि के भले अलविदा कह दिहलीं बाकिर उहाँ के हिन्दी आ भोजपुरी– दूनू में लिख के आपन जवन नेह–छोह अपना मतारी मासा बदे दिखवनीं, ऊ आजो एह बात के भरोसा दिला रहल बा कि भोजपुरी सोच आ संवेदने के धरातल पर ना बलुक बुनावट आ बिम्बात्मक–प्रतीकात्मक प्रयोगो आदि के दिसा. ई एगो समृद्ध भाषा बिया।

भोजपुरी क्षेत्र बस्ती जिला (संत कबीर नगर)के मूल निवासी माहेश्वर तिवारी के जन्म 22 जुलाई 1939 के भइल रहे।आज अपना जीवन के 85 गो वसंत देखि के ई दुनियाँ छोड़ जाये वाला हिन्दी आ भोजपुरी के कनकाभ शिखर पूज्य माहेश्वर तिवारी जी के एगो हिन्दी गीत हटे–

''आज गीत
गाने का मन है ।
अपने को
पाने का मन है !

अपनी छाया है
फूलों में,
जीना चाह रहा
शूलों में,

मौसम पर
छाने का मन है !

नदी झील
झरनों सा बहना,
चाह रहा
कुछ पल यों रहना,

चिड़िया हो
जाने का मन है!

एजवा गीत –विहग बन जाये के चाहत लिहले कवि नदी,झील आ झरना जस पूरा रवानी में बहे के कामना करत दिखत बा ।ऊ जानत बा कि खिलल फूलनो में ओकरे कल्पना के रंग भरल बा आ ओकरा काँटो के चुभन में कवि के जीवने के संघर्ष लपेटाइल बा।एही से ऊ गीत हो जाये के चाहत राखत बा जवना में जीवन के गति आ मस्ती के साथे साथे मनुष्य के वियोग आ व्यथा के कहानियो भरल पड़ल बा ।

माहेश्वर तिवारी जी के भोजपुरी में हालाँकि कवनों कविता³– संग्रह नइखे छपल बाकिर उहाँ के भोजपुरियो में एतना जरूर लिख दिहले बानीं कि एगो बढ़िया कविता संग्रह छप सकत बा।छिटपुट कविता उहाँ के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' , 'पाती' , 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका 'आ कुछ आउरो पत्र–पत्रिकन में मिल जइहें सँ। कुछ कविता संग्रहो में उहाँ के भोजपुरी गीत–गजल आ कविता मिल जाई।उहाँ के भोजपुरी में कमे लिखनीं बाकिर काम लाएक लिखनीं,उत्कृष्ट रूप में लिखनीं–आधा–अधूरा मन से ना लिखनीं।ऊ ऊहाँ के लेफ्ट हैंड राइटिंग ना रहे। उहाँ के भोजपुरी रचनो पोढ़ आ पढ़नउक बा।बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में डॉ.रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव जी के संपादन में प्रकाशित आधुनिक भोजपुरी कविता के एगो संग्रह पढ़ावल जात रहे –''आगे–आगे।'' माहेश्वर तिवारी जी के कुछ कविता एमें छपल बाड़ी सँ। प्रोफेसर जयकांत सिंह जी का सौजन्य से ऊ हमरा आज मिल गइली ह सँ। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में तिवारी जी के कपिल जी खूब छापत रहनीं।अरुणेश नीरन जी,सूर्यदेव पाठक 'पराग' आ अशोक द्विवेदी जी के संपादनो में तिवारी जी के रचना क्रमशः 'समकालीन भोजपुरी साहित्य','बिगुल' आ 'पाती' में छपल बाड़ी सँ।बाद में तिवारी जी के प्रकाशित भोजपुरी रचनन के बिटोर के आलेख के आउरो समृद्ध कइल जाई बाकिर आज त उहाँ के महापयान के घड़ी में उहाँ के कुछ नवबोधी रचनने आ गीत–गजलन के आधार पर उहाँ के कवित्व के हम आपन प्रणति निवेदित करे के चाहबि।

'आगे –आगे' में एगो कविता बिया –'हमरा बीच में।' एह कविता में गीतकार माहेश्वर तिवारी जी समकालीन कविता के सोच, संवेदना आ शिल्प सगरी लेले भोजपुरी में हाजिर

बानीं।कविता में आम जन के पीड़ा के मजिगर उकेराई भइल बा। छंदमुक्त एह कविता में एगो गीतकार अपना कोमल संवेदना के साथे उपस्थित बा बाकिर विचार आ युगीन संताप के दबावो के ऊ अनदेखी नइखे कर सकल।ऊ प्राकृतिक उपादानन के जरिए मानव –मानव के बीच बढ़त जा रहल दूरी के झलकावत अपना जनवादी चेतना के इजहार कर रहल बा–

''हमरा भइला का बीच में
एगो पहाड़ बा
जवन रोज बढ़त जाला
चट्टान –दर– चट्टान ।
हमरा भइला के बीच में
एगो खानि ह
जवने में हम रोज उतरीला
मजदूर जइसन
कोयला बन जाये खातिर ।
हमरा भइला का बीच में
पूरा क पूरा आसमान बा
बाज अइसन चुप्पी पहिरले ।
बाकिर हमरा बीच
कहीं नाहीं बा ऊ जमीन
जहाँ हम अपने के बोइ सकीं।'' (आगे–आगे)

हर मनुष्य के ई प्रकृति होला कि ऊ आपन कुछ विशेष दाय छोड़ के विदा लेबे के चाहेला।वर्तम.ान में जीयतो ऊ भविष्यो खातिर कुछ अरजे के चाहेला।अपना के खरचत ऊ कुछ अइसन संगिरहो करे के चाहेला कि ओकरा अनुपस्थितियो में ओकर उपस्थिति बनल रहो ,ओकरा वियोगो में ओकर नेह–नाता बनल रहो।ऊ अपना बादो आपन इयाद के बीज बो के आपन विरासत जिन्दा राखे के चाहेला। ऊ अपना आज आ अपना भइला के बीच में पहाड़न के बढ़ला के महसूस त करेला य बाकिर एह दूनू के बीच के खाई के पाटे खातिर ओह में रोज मजदूर मतिन उतरे के चाहेला।ऊ जानत बा कि एह खाई में रोज उतरला के का मतलब बा।मतलब साफ बा कि ओकरो एक दिन कोइला हो जाये के पड़ी।बाकिर कवि एहू से भागे के नइखे चाहत।कोयला के तपन, ओकर लाली –ओह सभ के जरूरत कवि का बा।ऊ जानत बा कि आज आ आवे वाला काल्ह का बीच में ई एगो आसमानो बा जवन बाज के चुप्पी पहिरले बा।चुप्पी के ई पहिरावा अइसनका नइखे कि कवि का जल्दी से छुटकारा मिल जाये के भरोसा हो खे।कवि एही से आपन होनाइये के जोगवले अप.ना धरती के तलाशत नजर आवत बा ताकि ओ.करा एगो अइसनका आधार मिल जाव जवना में ऊ आपन वजूद के बिछड़ा रोपि सके।कवि एकरो संभावना ना देखि के विकल हो जात बा।

माहेश्वर जी के एगो दोसर कविता बिया – ''गाय ,चिरई अउर हम।' एह कवितो में कवि मनुष्य के आदिम संवेदना जोगवले रहे खातिर बेचौन दिखत बा।ऊ गाय लेखाँ जीभ आ चिरई लेखाँ चोंच के साथे जीये के चाहत बा ताकि ओकर मन संवेदना से भरल–पूरल रहे–

''गाय चाटेले /अपना बछरू के/ चिरई आपन/ सगरो संवेदना /बटोरि लेले अपने चोंच में /जब होले अपने नरम चूजन के पास /हम कइसे पियार करीं /अपने बच्चन के /काहे कि हमरा पास नाहीं बा/ गाय अइसन लमहर जीभ/अउर अपने कुल देहि के /समेटि के/ चोंच में बटोर लेवे जइसन/ मन।'' (आगे–आगे)

चिरई आपन कुल्ह देहि के बटोरि के चोंच में चुनि के ले आइल दाना–दाना के कइसे घोंटा देबे के चाहेले अपने चूजन के ओइसहीं आदिमियो का अपना संतति में संवेदना उड़ेले में कवनों कोताही ना करे के चाहीं।एही संवेदना के उड़ेलाई में कमी के चलते परिवार,समाज जइसन संस्थन में दरार दिखे लागेला।

तिवारी जी के छंदमुक्त के एगो आउर छोटहने कविता बिया जवना के शीर्षक बा –'बच्चा'।ओकर पंक्ति बाड़ी सँ–

''बच्चा इसलेट पर लिखेल सँ/अउर सरसों के खेत से निकलि के/सड़क पर आइ जाला /सीटी बजावत /भीड़ बन जाये खातिर/आउर फेर जिनिगी भर जीयेला/अइसन छोट– मोट भरम/आपन असली चेहरा /उतारि के/आदमी कब तक जीयत रही/ ई सवाल /कई बरिस से मथि रहल बा।'' (आगे–आगे)

आदिमी छोट–मोट भरमे के शिकार भइल आपन नकली चेहरा उतारे के नइखे चाहत –कवि के ई चिन्ता वाजिब बा ।सीटी बजावत भरम जब ले भीड़ में समात रही बचवन के इसलेट के लिखाई कवनों कामे ना आई।

छंदमुक्त एगो आउर भोजपरी कविता बिया तिवारी जी के तीन खंड में । ई रचना भोजपुरी समकालीन कविता में एगो दमगर उपस्थिति दरज करावत बिया।शीर्षक बा –'ढोंढ़ा खाँ के अलगोझा सुनि के।' 'अलगोझा' (एक तरे के बाँसुरी) होले जवना के ढोढ़ा खाँ सधले रहलें।कवि, उनकर बिटिया,अलगोझा आ ढोढ़ा खाँ –चार गो जीयत आ जियतार उपादानन के लेके तीन खंड वाली ई कविता रचाइल बिया।अज्ञेय के कविता 'असाध्य वीणा 'के काव्यनायक प्रियंवद लेखाँ ढोंढ़ा खाँ के अलगोझा– वादन अप्रतिम बा।उनका अलगोझा के सुर ,लय आ तान पर कवि के 'रोशनी के धारदार फाँक अइसन' बिटिया के मन रम गइल बा।रमले नइखे बलुक ऊ ओह स्वर से एकाकार होके खुदे अलगोझा बन गइल बिया। जंगल के छाती के चीर के बिटिया अलगोझा के सुर के आपन घर बना लेले बिया । कवि के सवाल बहुते मार्मिक बा –''तब तू कहाँ रहेल ढोंढ़ा खाँ।''

ढोंढ़ा खाँ से कवि के कहनाम इहो बा कि –

''नाता –रिस्ता अँगुरी के दागी जइसन /छूटि रहल हवे /ऊ जवान हमार बेटी ह /रोशनी के एगो धारदार फाँक जइसन /तोहरे अलगोझा के सुर जब उतरे लागेला /ओकरा धमनी में हौले–हौले /संगीत क सरहद /रिस्तन के गोटेदार साड़ी पहिनि के खड़ी हो जाले/अउर हमार अपनापा /खोजे लागेला /जउन हमरा के /आपन पहचान करवाय सके।'' (आगे–आगे)

संगीत के भावभूमि पर रचाइल माहेश्वर जी के ई कविता संवेदना के धरातल पर अइसनका गझिन–महीन बुनावट वाली बिया कि मनुष्य के राग–चेतना के पहिचान खुदे बरजना के सगरी घूंघट हटा के सोझा ठाड़ हो जात बा।अपना कथ्य आ शिल्प दूनू दिसाईं ई भोजपुरी के एगो 'क्लासिक' रचना बिया।

माहेश्वर जी हालाँकि गीतिकाव्य के चतुर चितेरा रहनीं तबो नवबोधी छंदमुक्त कवितनो में उहाँ के कलम के कमाल देखे लायेक बा।

तिवारी जी भोजपुरियो में गीत लिखले बानीं ।हिन्दी गीतन के त उहाँ के 'बरह्म बाबा' हइये हईं –जइसन कि बुद्धिनाथ मिश्र जी)के कहनाम बा।उहाँ के एगो बड़ी प्रसिद्ध गीत ह जवना के एगो छंद हमरा इयाद आ रहल बा –

''एक तुम्हारा होना
क्या से क्या कर देता है !
बेजुबान छत दीवारों को
घर कर देता है!
खाली शब्दों में आता है
ऐसे अर्थ पिरोना

एक तुम्हारा होना
सपनों को स्वर देता है!''

भोजपुरियो में ग्रामीण आंचलिक बिम्बन के लेके रचाइल माहेश्वर जी के कुछ अइसन खूबसूरत गीत–नवगीत बाड़े सँ जवन भोजपुरी कविता में दुधिया चाँदनी में चंदन से सुवासित पूजा के थाल लिहले उतरल कवनों गँवई नवेली दुलहिन के पावनता आ सौन्दर्य के भरल–पूरल प्रतिरूप मानल जइहे सँ।

भोजपुरी में गीत–गजल लिखाई के जब बात आई त माहेश्वर तिवारी जी के इयाद करहीं के पड़ी।उहाँ के कुछ भोजपुरी गजलन के एजवा हम उदाहरन के तौर पर रखि रहल बानीं–

''रेत का घर में हकासल मछरी
जिन्दगी भइल पियासल मछरी।

अबकी निकलल समुद्र–मंथन से
पी गइल सगरो हलाहल मछरी ।

जी रहल बा इहे कहाँ कम बा
घर का पानी से निकालल मछरी।

आग सुनुगल त नदी ले फइलल
देखि के बा भइल विकल मछरी ।
''('पाती' पत्रिका)

एह गजल में मछरी के प्रतीक के जरिए आदिमिये के जिनिगी के विकलता, लाचारी आदि के बोध करावल गइल बा आ मानव– जिनिगिये के पियासल मछरी बतावत एजवा उपमेय में उपमान के सीधा आरोप करत अलंकार के छटो सिरिजल गइल बा।

एगो आउर गजल के बानगी देखे लायक बा–

'' गीत जइसन पियार मत छीने
जिन्दगी के सिंगार मत छीने ।

ओसे कुछ मन के तपन कम होला
पहिला–पहिली फुहार मत छीने।

मन उहाँ जाके तनिक सुस्ताला
बाबू अँगना दुआर मत छीने ।

बाँटल चाहत त अन्हरिया बाँट ले
मन के अगहन –कुआर मत छीने ।

लोग मिलि– जुलि के उठवले बाड़ें
पालकी से कहार मत छीने।''
('भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका')

–एह गजल में जिनिगी के सिंगार बचवले राखे खातिर कवि प्रेम,मनुहार, स्नेह,ममता,करुणा आदि के जोगवले राखे खातिर तत्पर बा।

माहेश्वर जी भोजपुरी में जादेतर गजले में हाथ–आजमाइश कइनीं।आज गजलन में जिनिगी आ जमाना के हर तरे के हलचल आ उद्वेलन देखे के मिल रहल बा।तिवारी जी के गजलन में जिन्दगी आ जमाना के धड़कन सुनल जा सकत बा।बाकिर उहाँ के ई विशेषता बा कि तल्ख सच्चाई आ यथार्थ के उकेरत गजल विधा के प्रान तत्व–मुलायमियत आ मासूमियत के रक्षा करहूँ के दिसाई सजग– सचेष्ट बानीं।उहाँ के बिम्ब आ प्रतीकनो के चयनो में ई मुलायमियत आ नाजुक खयाली साफ तरे दिखाई पड़त बा। बदरिया, मेघा, फुहार, चंदा, चकोर, दरिया, नदिया, मछरिया, अँजोरिया, अन्हरिया, चिरई, बेला, चमेली, अँचरा, ओठवा, तलवा, पोखरिया, पंखुरिया आदि उपमानन आ प्रतीकन के भरमार बा।माहेश्वर जी हिन्दी नवगीतनो में बिम्बन के चयन के दिसाईं गीतन के आत्मा के जोगावे के भरपूर कोसिस करत दिखत बानीं।अपना जनवादी रुझान के बावजूदो उहाँ के अपना कविता ,गीत आ गजलन में हँसुआ–हथौड़ा के भँजाई करत भा कवनों अइसनका क्रांति के बीज उगावत नइखीं दिखत जवन जनता के बीच से ना आके एसी में बइठ के खाली मार्क्स के किताबने के पढ़ि के जगावे के कोसिस होला।

एगो गजल में प्रेम,अभिसार , मस्ती आदि के अइसन वर्णन भइल बा कि मन के अंगना में चान के फूल खिल उठल बा–

''चान के फूल फुलाइल गूइयाँ
बा महक मन में समाइल गुइयाँ।

कोना–अँतरा धियान में बूड़ल
याद बा मन में थिराइल गोइयाँ ।

दूध छलकल भरल कटोरा से
जिनिगी पी के अघाइल गूइयाँ ।

झोंका आइल बयार बउराइल
पंखुरी मन से छुआइल गूइयाँ।''
('समकालीन भोजपुरी साहित्य' पत्रिका)

एगो आउर गजल देखे लायेक बा जवना में ताजा प्राकृतिक बिम्बन के जरिए मनुष्य के रागात्मक सुघर सम्बन्धन के,ओकरा प्रेम–व्यवहारन के आ ओह प्रेम –व्यवहारन के गहिराई के प्रकट कइल गइल बा–

'' जइसे खोंतवा में चिरई लुकाइल बा
एगो सपना नजर में समाइल बा ।

बेला मह–मह हमरे पिरितिया के
तोहरे अँचरा के ओट में फुलाइल बा ।
खो के खोजीं भला कइसे बतावे हमके
गीत ओठवा में तोहरे हेराइल बा।

आजु आपन भइल बा हमार मनवाँ
जइसे तलवा के पनियाँ थिराइल बा।

कहीं रहिया में केहू ना चिन्हारी मिलि जाय
चान बदरा में जाइ के लुकाइल बा।''
('बिगुल' पत्रिका)

–ऊपर के गजल के शेरन में नजर में समाइल सपनन के खोतवा में लुकाइल चिरइन बतावल गइल बा।नजर में समाइल सपनन के मनई ओइसहीं सेवेला जइसे चिरई खोंता में अपना चूजन के।पंजाबी कवि पाश के कहनाम हटे कि आदिमी के जिनिगी में सबसे खतरनाक सपनन के मिट गइल होला।सपनन से जुदा मनुष्य के जिनिगी के कवनों मोल ना होला।एगो सपना होला जवन सुतला में आदमी देखेला आ एगो सपना होला जवन सुतहीं ना देला।दोसरा तरे के सपना जियतार सपना होला।ओकरा के सेवत–सेवत मनई एक दिन पूरा कर लेबे के कोसिस करेला। ''आज आपन भइल बा मनवा'' में अभिव्यक्ति –सौन्दर्य देखते बनत बा।मन पर आज बराबर केहू ना केहू के पहरा बनल रहत बा।अपना मन से जीयल मुहाल भइल जा रहल बा।अइसनका में ई कहल कि ''आजु आपन भइल बा हमार मनवा'' एगो अइसनका खुशी के दिखाई पड़ला जस बा जवन सब तरे के शान्तिये के हालत में संभव बा।एह स्थिति के तुलना ताल के पानी थिरइला से कवि कइले बा।असहीं राह में कवनों चिन्हार से बचे खातिर बदरा में चान के छिप गइल –कवि के अद्भुत कल्पना बा। भोजपुरी गजलन में भावाभिव्यक्ति खातिर एह तरे के सौष्ठव भरल काव्यात्मक प्रयत्नन के देखल बहुते प्रीतिकर आ संतोषदायी बा।

भोजपुरी में कुछ गीत आ नवगीतनो के रचना

रचना माहेश्वर तिवारी जी कइले बानीं।ई सब भोजपुरी गीत विधा के अनमोल थाती बाड़े सँ।'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका ' में दू गो गीत उहाँ के छपल रहे जवन बाद में सम्मेलन से प्रकाशित गीत –संग्रह 'धार के खिलाफ'(सम्पादक :पांडेय कपिल आ भगवती प्रसाद द्विवेदी) में भी संकलित भइल रहे। एमें के एगो गीत आध्यात्मिक ताना–बाना में रचाइल रहे जबकि दोसरका गीत में नवगीत के प्रकृति आ मिजाज से जुड़ल रहे।एह दूनू गीतन के जरिये तिवारी जी के गीति–कला के बानगी देखल–परखल जा सकत बा।

हिन्दी के प्रख्यात कवि केदार नाथ सिंह जे शुरु में गीते से अपना कवि –जीवन के शुरुआत कइले रहनीं, लिखले बानीं कि ''सबकुछ कह लिहला के बादो कवि के मन में जवन एगो भाषातीत गूँज बचल रहि जाला गीत के शुरुआत ठीक उहवें से होला आउर ओकर सफलता एही में होला कि ओह 'भाषातीत गूँज' के भाषा के सम्पर्क से कम– से– कम दूषित आ विकृत कइल जाव।।'' साँच पूछल जाव त गीत के सहज , स्वाभाविक आ अकृत्रिम सिरिजना तभिये संभव होइयो पावेला जब भाषायी चमत्कार ले जादे भावाभिव्यक्ति के तरजीह मिलेला।जवना के केदार जी ''भाषायी गूँज'' कहलें ओकरे के स्टीफेन स्पेंडर ''अनुभव के तीव्र ऊर्जा के शब्द–शून्यता'' कहिके संबोधित कइले बाड़ें। कन्हैया लाल नंदन जी 'श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन ' के भूमिका में लिखले बाड़न कि '' अनुभव के बेसम्हार बेचैनी, खण्ड में समग्र के पावे वाली दृष्टि आ एह सभके अपना भीतर के लय से जोड़े वाली लीला के समाहित रूप गीत होला जवना में समाधि शिथिल ना होखे के चाहीं ।इहे गीतात्मक वृति के पहिलका शर्त हटे।'' माहेश्वर तिवारी जी के गीतो के पंक्ति एही बात के तस्दीक कर रहल बिया – ''मन में बइठलध लगे अभंग सुनावेला केहू!'' ई अभंग,अभेद आ अखंडे के चेतना सम्पूर्णता के चाहत वाली दृष्टि पैदा करि के सुर के कपड़ा पहिरावेले ,नूपर–धुन से लहरि–लहरि चुनि के गीत के सिरिजना करेले। माहेश्वर जी अपना एह भोजपुरी गीत में स्पष्ट कर देले बाड़ें कि सगरी जिनिगिये सुरमय होले। ई पूरा जीवन नाद– बरम के घर होला।अइसनका में त ई कहल उचिते होई कि गीते जीवन ह आ एह जीवन के गतिये गीत ह।ई भाषातीत अनुभव कि मनुष्य के जीवन में पइठल केहू दोसरे आपन गीत गावेला, तान छेड़ेला–गीतकार के आध्यात्मिक चेतना के अप्रतिम उदाहरण बा।माहेश्वर जी के गीत पंक्तियन के देखल जा सकत बा–

''मन में बइठल
लगे अभंग सुनावेला केहू !
सुर के कपड़ा हमरा के पहिरावेला केहू !
करे बतकही
हलुका सुर में
जइसे जागलि
धुन नूपुर में
लहरि–लहरि से
चुनि के गीत बनावेला केहू!

अब त सगरो
जिनिगी सुर बा
नाद बरम के
बड़का घर बा
अंग–अंग में
पइठल जइसे गावेला केहू!''
('धार के खिलाफ')

तिवारी जी के दोसरका गीत नवगीत के प्रकृति आ रूप लिहले बा जहाँ युग के संताप से अँजोरिया काँपत दिखत बिया,किरिन के डोरी टूट गइल बा , धूरि भरल करिया आन्ही में प्रेम–बिटप के डारियो टूट गइल बा आ बादर बिजुरी के अंगार चूमे खातिर मजबूर बा–

'' अइसन भइल अन्हार
अँजोरिया थर –थर काँपे!

बाबा के अँगुरी
जस छूटल
किरिन–किरिन के
डोरी टूटल
टूटल कतो अरार
अँजोरिया थर–थर काँपे!

करिया आन्ही
पागल घूमे
टूटलि डारि
उठाके चूमे
बादर चूमे अंगार
अँजोरिया थर–थर काँपे !
(''धार के खिलाफ'')

एह नवगीत में नया–नया प्राकृतिक बिम्बन के जरिए सांसारिक विसंगति आ विद्रूपता के उरेहाई भइल बा।भोजपुरी गीतन के समृद्ध करे के दिसाई ई गीत सब बराबर इयाद कइल जइहें सँ।

एगो गीत हमरा 'पाती' में पढ़े के मिलल ह जवन माईभाषा भोजपुरी के साथे रचल जा रहल चकुरचाली आ षडयंत्रन के तार–तार कर के रख देत बा । बुझात बा जइसे अपना एह भोजपुरी गीत में माहेश्वर जी राजनीतिक

दॉव–पेंच में अझुराइल भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के सवाल के साथे हो रहल मजाक के बड़ी गंभीरता के साथ उठवले बानीं–

'' बतावे तनीं बाबू
अब का माँगे अइले?
बोली दिहनीं
बानीं दिहनीं
कुर्सी अउर
रजधानी दिहनीं
तू एतना पाइके
काहे दुबरइले?
सपना हमके
बहुत देखवले
किसिम–किसिम से
तू भरमवले
सबकुछ खाइके
ना तनिको अघइले
कइसे अब
विसवास करीं हम
तोहरो कवनों
आस करीं हम–
आपन कहल तू
अपने भुलइले। ('पाती)

भोजपुरी के ई गीत चुनावी मौसम में हमनीं लगे छोड़ि के माहेश्वर तिवारी जी अपने 'स्वर्गीय' हो गइनीं।भोजपुरी के अनगिनत सपूत आ शुभचिंतक धीरे –धीरे हमनीं के अलविदा कहि रहल बाड़ें , तबो हमरा भरोसा बा कि इन्हनि के संघर्ष ,संकल्प आ सपना आखिर ले जीवंत आ प्रेरणादायी बनल रही ।जनमजुगी जगवैया ना सूती ,ना केहू के सूते दी तब ले, जब ले कि ओकर संकल्प पूरा ना हो जाई।ई साधना आ संकल्प के भावे माहेश्वर तिवारी जइसन भोजपुरी के सच्चा सपूत खातिर आज विनम्र सच्चा श्रद्धान्वित नमन होई भोजपुरी जगत का ओरि से।

❑❑

❍ फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस
(सर गणेशदत्त महाविद्यालय के सामने)
सर गणेशदत्त लेन,रघुनाथ पथ
आर.पी.एस.मोड़
दानापुर निजामत
दानापुर–801503(पटना),बिहार।

डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव

कहवां भुलाइल देशवा

कहवां भुलाइल देशवा हमार,
पछुआई से घर भरल बा।
गाँव विलाइल, शहर लुकाईल,
महनगरन के बात उठल बा!

कुरियर, कॉरियर एकहि बतिया,
चीठी बँटाई, भाग जोगाई,
बड़िका इजीनियर बनि के आई
बुतरू कोटा दीली (दिल्ली)जाई
चान– सुरुजवा भलहि न देखी,
उहां एकहिं दिन – रात भईल बा!

चिउड़ा–भूजा, सतुआ छोड़िके,
पिज्जा, चीली, बरगर खाई
जीउ सुखाई,मास मोटाई,
काबू साँचो, तनिको न आई,
ढ़हत, ढ़िमलात चलिला भाई,
नगरन के सौगात मिलल बा।

मोछ मुड़वलस, बारी पहिरलस,
फाटल जिन्सहि कुरता खोंसलस,
हीरो बनिके अंइठत– जोठत,
सारी थैंकू ठाठ से कहलस
घर के सगरे रीत बिकाइल,
अंइसन ई जजवात उठल बा!

❑❑

❍ पटना बिहार

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

तरकुल–कथा

दिनेश पाण्डेय

बइसाख में तार के जिकिर ना होखे त बात कुछ अधूरे रही।

'ताड़' भा 'तार' के मूल संस्कृत के 'ताल' (तल् +अच् +अण) ह। तल् धातु ठहराव, आधार, टेक, दृढ़ता, ऊँचाई, हद आदि के अर्थबोधक ह ए से इन्ह गुनन से युक्त एह खास तरु के अभिधान 'ताल' के जथारथ समुझल जा सकेला। 'ताल' हथेलियो के वाचक ह, हो सकेला कि तार–पात के पसरल हथेलीनुमा गठान एह अभिधान के विकास के ओजह होखे। एह नजरिए अंगरेजी के शब्द'पाम'(palm) बिचार जोग बा जवन एके संगे तारगाछ आ फैलल हथेली दुन्नो के बोधक ह। संस्कृत में तालद्रुम, पत्री, दीर्घ स्कंध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस, मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, तृणराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आसवद्रु, लेख्यपत्र, महोन्नत आदि तार के पर्याय हवें। भोजपुरी में तार, ताड़, ताल, तरकुल एकर पर्याय के रूप में प्रचलित शब्द हवें।

तार सोझ, खंभ जइसन, शाखाहीन आ लमहर फेंड़ ह जवना में डाढ़ि ना निकले, बलु धड़े से पात लागेला। भारत में तार मुख्य रूप से बिहार, बंगाल, झारखंड आ पठारी क्षेत्रन में पावल जालें। ई सदाबहार बिरिछ हवें जिनकर ऊँचाई तकरीबन 45 से 50 मीटर तक हो सकेला। तार में पतझर ना होखे बलु पतई पुरान पड़े से सूख के गिर जाली। तार के सूखल पतई 'खगड़ा' ह। लकड़ी के अंदरूनी बनावट सूत के ठोस लच्छा अस होला। पतई के डंठलन के जुदा होखे के निशान बाकी रह जाए से तार के खाल कड़ी खुरदरी दीखेली। तार दू तरे के होलें, जवन गाछ में केवल रोआँदार फूल लागेले ऊ नर ह, जेकरा के बल्लरी, बलुरी, बल्तार, फुल्तार, फुल्लदों भा बलहा कहल जाला। मादा गाछ में फल लागेला एही से ई फलतार, फलदार, फल्ला भा फलहा ह। तार के नवोज आ अल्पवयस गाछि खँगरा ह। बसंत में रसियाए वाला जेठुआ, बरसात में रस देवे वाला धौर आ बरमहल रस–स्राव करे वाला तार धौदहा ह। ग्रामीण इलाका में तार के लकड़ी के प्रयोग धरन–बँड़ेर, शहतीर, चारपाई के पउआ–पाटी, बाड़ के खंभा वगैरह बनावे में अधिका होला। एकर लकड़ी रेशेदार होखे के कारन सीसो–सागबान से भी जियादह मजगूत आ मौसम भा कठखोर कीटन के प्रकोप के प्रति अधिका घठाउर हो खेला।

तार–गाछ में गझिन पात ना होखे। एकर ऊपरी सिरा प बड़–बड़ पतई होली जेकर लंबाई बित्ता भ से ले के बियावँ तक हो सकेला। पतई के डाँठि चाकर, चापुट आ मजगूत होला, जवना में एक–दोसरा से जुड़ल चौड़ी पट्टी के प्रसृत हथेली भा पंखा के आकार के, कइयक लमहर वृन्त आ किनारे से कटल फलकवाली कड़ा, रेशेदार पतई लागल रहेली। पतइन के सतह बहुधा चिक्कन बाकिर कुछ प्रजाति में काँटेदार होली। ताड़ के पतई सूख के कागज अस चिक्कन हो जाली, एही से बहुत पहिले ताड़पत्र के प्रयोग बतौर लेखनपट्ट कइल जात रहे। पात (पत्+घञ्) के मूल पत् धातु ह जवन नीचे के ओरि गति भा कही कि गिरे के अर्थ में ह। पत्ता, पताई, पत्तल, पतंग, पतन, पतित, पत्र, पाती, पट, पाट, पट्टी जइसन ना जाने कतिने शब्दन के विकास के पीछे एही पत् के भूमिका बा। ताड़–पात प लेखन के शुरुआती तरीका में पतइन के भिगो के, उबाले, सुखावे आ चिक्कन शंख, पत्थल आदि से घोंट के सतह के चिकनावे के बाद शाही के काँट, शलाका आदि से अच्छर कुरेदे तकरा बाद रोशनाई पोत के पोथी तैयार करे के क्रमवार विधि रहे। 'लिखल' क्रिया के मूल संस्कृत के लिख् धातु ह। 'लिख' चितरेखन, उकेरन, 'अक्षर–विन्यास', रेखा खींचे, खुरचे, रगड़े–घिसे, रंग भरे के अर्थ वाली धातु ह जेकरा पीछे एही ताड़–पात प लिपिलेखन के पुरातिहास बा। वर्तमान में तार के पतई के मकान के छादन, चटाई, घर के आसपास, बाग आदि के घेराबंदी, डलिया–भौकी, बेना, हैट, हस्तकला के विविध सामग्री बनावे में प्रयोग होला। पतई से बनल घिरनई आ फोंफी लरिकन के खेल आ आनंद के साधन होले। डंठल के रेशा से रसरी, चटाई, जाल आदि बनेले।

फलहा ताड़ घौंद के रूप में फरेला। चइत महीना फूल लागे के ह। बइसाख फर धरे के मौसम ह जेकरा के 'फेदा लागल' कहल जाला। फर के अल्प–विकसित रूप फेदा आ पउढ़ रूप बलगुद्दा ह। तार के एकही फर अलग–अलग अवस्था में अलग–अलग स्वाद के खाद्य–सामग्री दे जाला। फेदा के भीतर से निकलल बरफ के रंग के कोवा आ पाकल बलगुद्दा के ऊपरी छिलका के तरे आँठी के रेशदार तह से पेर के निकालल गूदा खूब खाइल जाले। तार के आँठियो बेकार ना जाय। बाद में अंकुरित आँठी काट के निकालल सफेद कोवा के स्वाद के अलगे आनंद ह। आँठी के गरी से

तेलो निकालल जाला, रेशा गद्दी भरे, रस्सी बनावे के काम में आवेला।

तार के एक महत्त्वपूर्ण उत्पाद तारी ह। एकरा के ताड़ी, तालासव, तरकुलारिष्ट, बैसक्खा, आकाशी के नाँवों से जानल जाला। तार के तना के ऊपरी भाग, बलुरी आ फेदा–मूल के छेदन से तालरस या कि नीरा के स्राव होला। नीरा एक मधुर आ पौष्टक पेय ह। तालरस में विटामिन बी के अधिकता होला एकरा अलावे ग्लुकोज, फ्रुक्टोज, आवश्यक अमीनो एसिड अउर थोरिक मैंगनीज आदि पावल जाले जवन सेहत खातिर फायदेमंद हवें। अब त नीरा से चीनी–मिसरी भी बने लगले। नीरा में खमीर पैदा होखे या कहीं कि किण्वीकरण से अल्कोहल पैदा होला, एह सरूप में एकर अभिधान तारी ह जवन एक मादक पेय के रूप में प्रचलित बा। तारी में औषधीय गुन कम नइखे। एकर पुलटिस फोडा या घाव खातिर लाभकारी ह। आयुर्वेद में तारी के कफ–पित्त, प्रदाह आ सूजन के शमन करे वाला बतावल गइल बा। ई कृमिहर, कुष्ठ आ रक्तपित्त नाशक मानल जाला। तारी बेरी–बेरी रोग में लाभकारी होला। तारी से सिरको बनेला। तारी एक प्राकृतिक ओज आ बलवर्धक पेय ह जे में सब जरूरी पोषक–तत्त्व होलें।

गाछ से तारी उतरला के ताड़ी बनावल कहल जाला। तारी उतारे के कार अनुभवी कारीगर के जिम्मे होला। बिहार, उत्तर प्रदेश के इलाका में अक्सर ई काम पाशी जाति के लोग जातिगत पेशा के तौर प करेलें। एह से तार आ एकरा से जुड़ल हर व्यवसाय पर एक तरह से उनकर एकाधिकार बा। गाछ प चढ़े खातिर रस्सी के मजगूत फंदा होला, जेकरा के कारीगर पैर में फंसा के फेंड़ प बाँह के घेरा बना के चढ़े लें। कारीगर के डाँड़ में एक पातर मजगूत रस्सी बँधल होला जवन देह के तार के गाछ में लपेटले रहेला। बाजू के जोर से ऊपर सरकल जाला आ पैर के फंदा तार के रूखर तना प टिके में अलम देला। डाँड़ में बंधल रस्सी में पीछे कावर लोहा के अँकुसी होले जवना से तारी उतारे खातिर माटी के एक खास आकार के पात्र, 'लबनी', लटकल रहेला। अब लबनी के रूप में प्लास्टिक के बरतन के प्रयोग अधिका होखे लागल। तार के तना, बलुरी आ फेदा छेवे खातिर लोहा के तेज धारदार हँसियानुमा हथियार हँसुली, फँसुली या कि चाकू के प्रयोग होला। कटान के जगह तार के पतई से बनल दोनी (द्रोणी) या कि पतनारी (पत्रनालिका) डाल दिहल जाला जेकर सिरा लबनी में खुलेला। बलहा तार में बलुरी के कटल सिरा के लबनी में घुसेड़ के टाँग दिहल जाला जवना में रस एकट्ठा होला। अगते के टाँगल लबनी में एकट्ठा रस के कारीगर डाँड़ से लटकल लबनी में भर के नीचे उतर आवेलें। तारी के भोरे, दुपहरिया आ साँझ तीनों बखत उतारल जाला, तेकरे अनुसार तेकर गुन–तासीर ह। अधरतिया के तारी गुन, स्वाद आ असर में सबसे नीक मानल जाला। भोरहरियो के तारी हलुक मधुर, हलुक मादक आ पुष्टिकारक ह, दुपहरी के तारी तुरुस (तुर्श– फा०), नशीली ह। नशा के लती लोग दुपरिया के तारी पीएलें। समय, मात्रा आ साफ–सफाई के ख्याल ना रखले एकर उलटा असर त होखहीं के बा। तारी के ईहे लोग बदनाम कइले ना त एकरा सेवन कवनों दोष नइखे जनात।

फजिरे–साँझ के ललाई मेलित स्याह छितिज के किरमिची प तरबन्नी के गाछ से नीरा उतारत पाशी के चित्र आम ह। ई कवनो अहथिर तस्वीर के बानगी ना ह, तनिक धेयान दिहले एकरा पीछे के जथारथ लोक जरूर उजागर होखी, जवना में रंग, गति, प्रशान्ति, श्रम–गंध के सोन्हापन आ फिर बेबसी, आमदरफ्त, शेखी, चखचख, भड़कताल का संगे 'ठगिनी क्यों नैना झमकावे' के निरगुनियाँ अनुगूंज जइसन समूचा बैताल–लोक बा। अचरज कम नइखे–

"एक अचंभा देखा भाई,
बानर दूहे गाय।
छाल्ही काट अकारथ फेंके,
दूध बनारस जाय।"

भारतीय साहित्य में तार के फेड़ के मौजूदगी के सबूत पुरातन काल से मिलेला। 'रामायण' के गौड़ीय आ उत्तर–पच्छिमी पाठ में सुग्रीव द्वारा राम के ताकत आजमाइश के प्रसेग में 'सप्त–ताल–भेदन' के जिकिर आवेला– "भित्वा तालान्गिरिप्रस्थं सप्तभूमिं विवेश ह... (१२.३–४)।" परवर्ती अध्यात्म रामायण, अग्निपुराण, नृसिंहपुराण, महाभागवतपुराण, पद्मपुराण, आनन्द रामायण में तार–बिरिछ के भेदन के संदर्भ बाड़न। 'काशिका' में उद्यानमह (बगीचीपूजन) के अंतर्गत एक क्रीड़ा में 'तालभञ्जिका' के उल्लेख मिलेला। सांची–बौद्ध स्तूप के तोरणस्तम्भ प मांगलिक चिह्न से बनल दुगो माला के उकेरन भइल बा। एक में मांगलिक चिह्न के रूप में– सूर्य, चक्र, पद्मसर, अंकुश, वैजयंती, कमल, दर्पण, फरसा, श्रीवत्स, मीनमिथुन और श्रीवक्षु आ दोसरकी माला में कमल, अंकुश, कल्पवृक्ष, दर्पण, श्रीवत्स, वैजयंती, मीनयुगल, परशु, पुष्पदाम, तालवृक्ष आ श्रीवृक्ष अंकित बा। जाहिर बा कि पुरातन में तार के सांस्कृतिक महत्त्व कम ना रहल ह। 'रघुवंशम्' (१५.२३) में रिपुसूदन संगे लवणासुर के जुद्ध के दरम्यान दहिनवारी हाथ ऊपर उठा के बवंडर–प्रेरित ताड़गाछ वाला पहाड़ जइसन झपटा मारत निशाचर के उपमित कइल गइल बा–

"तमुपाद्रवदुद्यम्य दक्षिणं दोर्निशाचरः।
एकताल इवोत्पातपवनप्रेरितो गिरिः।।"

'मेघदूतम्' में उज्जयिनी के कथक्कड़न द्वारा प्रवासी लोग के अक्सरहाँ सुनावल जाए वाला राजा उदयन–वासवदत्ता के किस्सा–कहनी में वासवदत्ता के पिता राजा प्रद्योत के सोनहुली तरबन्नी– 'हैमंतालद्रुमवनमभूदत्र'– ख्यू०मे०– ३१–३, के जिकिर आइल बा।

अनुमान से परे आ संयोगप्रधान घटना के 'काकतालीय न्याय' कहल जाला। एकरा पीछे के किस्सा ह कि एगो कउआ कौनो गाछ प जा के बइठले। ऐन ओही बखत ऊपरे से तार के फेदा टूट के गिरल आ उनकर जान अखरेरे गइल। 'चन्द्रालोक' में– "यत्तया मेलनं तत्र लाभो मे यश्च सुभ्रुवः, तदेत्काकतालीयमवितर्कितसंभवम्" आ 'कुवलयानन्द' में– "पतत् तालफलं यथा काक. नोपभुक्तमेवं रहोदर्शनेक्षुभितहृदया तन्वी मयाभुक्ता" में एही बात के बोध करावल गइल बा। हिंहा एह बात के जिकिर में तार के मौजूदगी देखे जोग बा। प्रबुद्ध लोग कवनो लोकप्रचलित बात के उपयोग कइसे आपन सिरिजन में क लेला भर्तृहरि के हेह परतुक से समुझल जा सकेला–

"खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैःसन्तापिते मस्तके
।वाञ्छन्देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः ।।
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भग्नं सशब्दं शिरः ।प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः ।।"

(नीतिशतक, भर्तृहरि)

कवनों गंजा आदमी सिर प पड़ रहल घाम से संतप्त होके छाहाँ के तलाश में दैवात एगो ताड़ के फेंड़ के नीचे जाके ठाढ़ हो गइल। ऐन ओही ब खत ताड़ के एगो बड़हन फर ओकरा मगज प बड़ी जोर से गिरल आ उनकर खोपड़ी दरक गइल। ठीके ह कि अभागा आदमी जहवें जइहें उनकर बीपत साथे जाला।,

दुनिया भर में तार के लेके कुछ–ना–कुछ प्रतिकात्मक सांस्कृतिक अवधारणा पावल जाला। प्राचीन मिस्र में तार उपजाऊपन, समृद्धि, सुघरई, आध्यात्मिकता आ लचीलापन के प्रतीक के रूप में उभरल। उहाँ धार्मिक अनुष्ठान में तार के खँगरा के उपयोग रहल ह। अजहूँ मिस्र में कब्र, मंदिर के नक्काशी में तार–बिरिछ के अंकन होला। मान्यता ह कि एह से चिरजीवन सुरक्षित होला। 'हाथोर' आ 'ओसिरिस' जइसन देवता के संबंध एही फेंड़ से बा। मेसोपोटामिया के अर्थबेवस्था में तार के प्रमुख भूमिका रहल। तरकुल के संबंध रनदेवी 'ईशर' से ह। ईसाई परंपरा में तरकुल सफलता आ विजय के प्रतिनिधित्व करेला। यीशु के यरुशलेम अइला प लोग तार के शाखा के उनकर स्वागत कइले रहले। मध्यपूर्व के संस्कृति में तार के सनमान एकर सुस्वादू फर छँहिरा आर्थिक महत्व के लेके रहल। हिंहाँ ई आसीस, अतिथि सत्कार आ जीविका के प्रतीक मानल गइल। रेगिस्तानी संस्कृतियन में लोगन के तार प निर्भरता आधिक बा जवना से पारंपरिक शिल्प, भोजन, आसरे, रेशा आदि सामग्री पावल जाली।

तार के फेंड़ के आधुनिक प्रतीकबोध में ताकत, थिरता, उलटे हालात में मजगूती से काएम रहल शामिल बाड़न। तार के पतई शांति, प्रचूरता आ जीत के प्रतिनिधि हई, उनकर पंखानुमा आकीरति खुलापन आ आशावाद के उजागर करेली। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एक कविता 'ताल–गाछ' के भाव–छाँही ह–

"एकटंगे ठाढ़ बा तार के पेड़/सब फेंड़न के पछारत / आकाश का ओरि हुलुकत / करिया बादर जइसन पँवरे / एकबारगी उड़ जाए के इच्छा से भरल /मगर एकरा पाँख कहाँ मिली / एही से ई आपन माथा पर के गोल–गोल पतइन पर आपन इच्छा पसार देला / मने–मने सोचत जइसे ईहे ओकर पाँख ह/अब एकरा उड़े आ आपन घर पीछे छोड़े से केहू ना रोक सके / आ पूरे दिन हवा में पतई काँपेली–मर्मर आवाज में/मन में सोचत जइसे कि ऊ तरइन से तान कहईं जाए के मकसद से उड़ान भरत होखस/फिर जब हवा ठहरे से पतइन के काँपल धीम पर जाला / कल्पना के उड़ान धरती प लौट आवेली / जइसे कि धरती आपन माई हई / आ ई एक बार फिर धरती के एह परिवेश से प्यार करेला।"

गुरुदेव के एह कविता में तार–गाछ परतच्छ तौर प आपन समूचे गतिशील परिवेश का संगे छितिज के किरमिची प उकेरल प्रकृति के एक उपादान हो सकेला बकिर एमें परगट जद्दोजहद, जय, तिश्नगी, सपन, जीवन के जथारथ बोध आ तेकरा बदे मोह–भावना के चोखापन कहीं जियादह बा।

बात के कवनो विराम ना ह। बात रुकलो प एगो गझिन मौन मुखर हो जालनि आ बात के अंतरसोती तरे–तरे ससरत रहेली बाकिर छोड़ल जाय, हिंहाँ तिल के ताड़ बनवला के का दरकार?

❑❑

❍ संचार नगर, खगौल, पटना

कँवल के फूल

गीता चौबे गूँज

''दादी माँ ! कहानी सुनाइईं ना''
पिंकी के आवाज सुन के दादी के उदासी तनिके में छूमंतर हो गइल।

पिंकी के दादाजी के मउअत के बाद पिंकी के पापा आपन माई के शहर में ले अइलन। कहले तऽ इहे रहन कि गाँव में अकेले मन ना लागी, बाकि इहवां सभ का बीच में रहियो के अकेलापन लागत रहे उनका३ केहू भीरी समय कहाँ रहे जे दू घरी उनका पासे बइठो! गँउवाँ में तऽ काम से फुर्सत पवते अगल–बगल के लोग घेर लेत रहन। ओहिजा ऊ केहू के काकी, केहू के बड़की माई तऽ केहू के भौजी रहली। पार्वती नाम तऽ जइसे नइहरे में छूट गइल रहे। पुकार के नाम परबतिया ऊ खुदे भूला गइल रही।

लइकन के शहर में बसला पऽ दूनो पुरनिया के गाँवे में रहे में नीक लागे। रोजे केहू ना केहू के मदद करे के, ओहनी के दुख–सुख में सामिल होखे, आउर ना तऽ कम–से–कम गाछ–बिरीछ से बतियावे के । दिन कइसे सरक जात रहे पतो ना लागत रहे। एहिजा उहे दिनवा परबत अइसन लागे जवन कटले ना कटे। सभे आपन–आपन काम में बाझल रही भा मोबाइल में ढूकल रही। घर में बुतरू रहलो पऽ एकदम साःति छवले रही सगरो। सभे अनुशासन के कमान में रही। खाली जरूरत भऽ बात होई।

''अचानक तोहे कहानी कइसे इयाद आया बिटिया?'' पिंकी के साथ थोड़–बहुत हिंदी बोले के सीख गइल रही दादी।

''आज मेरे स्कूल में मिस ने यही होमवर्क दिया है और कहा कि नानी–दादी की कहानियाँ काफी इंट्रेस्टिंग होती हैं। अपने कल्चर को जिंदा र खने के लिए हमें उसे भी जानना चाहिए। सुनाइए न दादी! ''

'' कहानी तऽ सुना देंगे, बाकी तोहे समझ में आएगा? हम ऊ नीमन हिंदी नहीं बोल पाते ना।''
''डोंट वरी दादी माँ! आप सुनाइए, मैं रेकार्ड कर लूँगी और गुगल ट्रांसलेटर से समझ जाऊँगी।

कल स्कूल में मेरी धाक जम जाएगी, क्योंकि किसी के यहाँ दानी–नानी नहीं रहतीं। आई एम सो लकी!

दादी को पिंकी की अंग्रेजी गिटपिट तो समझ नहीं आयी, पर बचपन से कहानियों की शौकीन थी। कितने दिनों बाद किसी ने बचपन का झरोखा खोला था।

''ठीक है बिटिया! हम तोह के कहानी सुनाएँगे, बाकी जइसे मेरी अजिया सुनाती थी वइसेही। हमलोग अपनी दादी माँ को अजिया कहते थे।''

''ओऽऽऽ नाइस! वह तो और रियलिस्टिक होगा। आप शुरू कीजिए, मैं वॉयस रेकार्डर आन कर लेती हूँ।''

अजिया का नाम लेते ही परबतिया नाम कौंध गया दादी के जेहन में और वह सीधे बचपन के गलियारे में पहुँच गयी

यूँ तो परबतिया छोटी उमर से ही बड़ी–बड़ी जिम्मेदारियाँ वहन करने लगी थी, परंतु थी तो बच्ची ही। कभी–कभार एक बात की जिद कर बैठती थी। वह थी अजिया (परबतिया की दादी) से कहानी सुनना। उसे कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता था। इसके लिए वह अजिया के सारे काम कर देती। उनके हाथ–पाँव दबाती। कहानी सुनने का ही लालच था जो अजिया के ट्रैक्टर जैसे खर्राटों के बावजूद उनके पास सोने को मजबूर कर देता था। ''कँवल का फूल'' वाली कहानी तो इतनी बार सुनी कि उसे पूरी तरह याद हो गयी थी फिर भी बार–बार उसी कहानी को सुनाने की जिद करती। जिम्मेदारी के बोझ से असमय ही बड़ी हो जाने वाली मातृहीन परबतिया के इस बालसुलभ जिद को अजिया भी बड़े प्यार से मान लिया करती थी।

''तऽ सुनो राजकुमारी की कहानी जेकर मथेला(शीर्षक) है – कँवल(कमल) का फूल। परबतिया की कहानी – अजिया की जुबानी जिसे पिंकी ने हिन्दी में रेकॉर्ड किया था

एगो राजा रहन। उनका एगो लइका आ एगो लइकी रही। लइकी जतने सुंदर रही, ओतने गुनी रहली। बाकी लइका महतारी के दुलार में बिगड़ गइल रहन। उनका पढ़े–लिखे में मन ना लागत रहे। उनकर संगत लखैरा लइकन से हो गइल रहे जवना के चलते राजा बड़ा कूफूत में रहत रहन। राजा उनका के खूब समझावस, ना समझला पऽ मारहूँ चलस बाकी, उनकर महतारी अपना अँचरा त लुकवा लेत रही। आ राजा से ककरहट करे लागत रही।

एने राजकुमारी खूब मन लगा के पढ़ल करस। सगरो उनकर जतने बड़ाई होखे, राजकुमार

के ओतने सिकाइत। एह से रानी खिसियाइल रहत रही राजकुमारी से।

अजिया दीर्घ साँस लेने के लिए थोड़ी देर को चुप होती कि परबतिया उतावली हो उठती,

''फिर का भइल?'' वह स्वयं को उस राजकुमारी की जगह कल्पना करने लगती।

कहानी का सिरा पुनः जुड़ जाता

'' एक दिन राजकुमार जुआ में सब पइसा हार गइलन। अगिला दाँव लगावे खाती कुछ ना रहे त जीते ओला बदमशवा कहलस कि राजकुमारी के दाँव पऽ लगा द। जीत जइब त सभ तोहार हो जाई, केहू के पतो ना चली। राजकुमार मान गइलन आ बहिन के दाँव पऽ लगा देलन।

'ई ठीक ना कईलन राजकुमार ' परबतिया बीच–बीच में अपनी राय भी देती जाती।

''हँ! ठीक तऽ नाहिंए कइलन। अबकियो बेर दाँव हार गइलन। अब जीते ओला उनका माथा पऽ चढ़ गइल कि तोहार बहिन अब हमार भइली। उनका के हमरा भीरी ले आव, हम उनका से बियाह करब३

'आह! बेचारी राजकुमारी! ' परबतिया राजकुमारी के दुःख को महसूस कर दुःखी हो उठती।

दादी आगे कहानी बढ़ाती

''राजकुमार फेरा में पड़लन कि कइसे आपन जान छोड़ाई। बाबुजी तऽ बियाह होखहिं ना दीहन। तब सोच–विचार के एगो पलान बनवलन। जवन जीतले रहे ओकरा से कहलन कि

' काल्ह हम आपन बहिन के तलाब के किनारे ले के आइब। तू तलाब में भीतरे लुकाइल रहिह। कमल के फूल में रस्सी बाँध के पानी के ऊपरे रि खह। बहिन के भेजब फूल ले आवे त तू फूल घ ासकावत जइह।जब डूबे भर पानी में बहिन पहुँचिहें त हम डूबे के हाल्ला कऽ के आदमी बटोरे जाइब त तू उनका के ले के भाग जइह।'

बिहान भइला पऽ राजकुमार रानी से कहलन,

ए माई! बाबुजी हमरा के नालायक कहकह के ताना मारेलन। आज हम खेत पऽ काम करे जाइब। उनका के देखा देब कि हमहुँ कुछ कर सकीले। बुचिया से हमार खाए ले के भेज दीह दुपहरिया में। बाबुजी के मत बतइह आ कवनो नोकर के साथे मत भेजिह। हम नइखीं चाहत कि नोकर हमरा के काम करत देख के हमार मजाक उड़ावस।

महतारी बेटा के बात मान लीहली आ बेटी के भेज दीहली खाए ले के। राजकुमारी खूब खुस होके आपन भइया के खाए ले के गइली।

'फिर?'

''फिर राजकुमारी जब गइली त उनकर भाई तलाब पऽ ले गइलन आ हाथ–मुँह धो के खाए के शुरू कइलन। ओही घरी तलाब में घाट के नज. दीक एगो खूब सुंदर कँवल के फूल खिलल देख के राजकुमारी कहली,

'' ए भइया! कातना सुंदर फूल बा हम तूर लीहीं? ''

'' हँ ए बहिनी जा तूर लऽ। ''

राजकुमारी किनारे से हाथ बढ़वली तऽ फूल तनिका दूर घसक गइल। राजकुमारी भइया से कहली,

'हथवा लफवनी ए भइया, तबहुँ ना मिले कँवल के फूल!

त भाई कहलन

' दीप जरत जाए, सूप बीनत जाए बहिनी तनिका आउर आगे जा। '

परबतिया बीच में टोकती,

' दीप आ सूप कहाँ से आ गइल एहिजा? '

अजिया बताती कि तलाब में छुपे आदमी के लिए संकेत था ताकि वह फूल खिसकाता चला जाए। कहानी आगे बढ़ाती हुई अजिया राजकुमारी की बात कहती

''घुट्टी भर पनिया में गइनी ए भइया! तबहुँ ना मिलले कँवल के फूल''

भाई खाते–खाते फिर कहस

' दीप जरत जाए, सूप बीनत जाए, बहिनी तनी आउर आगे जा..'

असहिं करत–करत राजकुमारी ठेहुना भऽ, डाँड़ भऽ आ फिर गर्दन भर पानी में चल गइली

'गर्दन भर पनिया में अइनी ए भइया! तबहुँ ना मिलले कँवल के फूल

ओकरा बाद राजकुमारी डुबुक–डुबुक करे लग. ली। राजकुमार हाल्ला गुल्ला करे लगलन कि हमार बहिन के बचाव जा, डूबल जात बाड़ी

तुरंतले ओहिजा भीड़ जुट गइल। तलाब में के अदीमी के मोका ना मिलल भागे के।

खबर राजा तक भी पहुँच गइल। राजा अइलन आ तलाब के पानी उलीचे के हुकुम दीहलन।

खूब पानी उचीलाए लागल। ओह में दूगो मुड़ी लउकल। दूनो के बहरी निकालल गइल। राजा के देख के उ अदिमिया थर–थर काँपे लागल आ सभ बात कह देलस राजा से कि कइसे राजकुमार जुआ में आपन बहिन के हार गइलन आ तलाब में कँवल फूल के बहाने बहिन के भेजलन कि हम उनका के ले भागीं। बाकी हम पकड़ा गइनी। एह में हमार कवनो दोस नइखे। हमरा के छोड़ दीहल जाय। राजा सोचलन कि ठीके कहता एकर का दोस?

दोसी त हमार आपन खून बा।
राजा खिसिया के आपन लइका के देसनिकाला दे देलन आ सब राज–पाट राजकुमारी के नाँवे कऽ देलन ।
कहानी गइल वन में, सोच आपना मन में। ''
''वाउ! सो नाइस स्टोरी दादी माँ! अब तो पक्का प्राइज मुझे ही मिलेगा ''कहती हुई पिंकी मोबाइल लेकर अपने रूम में।
दादी जानती थी कि अब पिंकी तभी दिखेगी, जब उसे कोई काम होगा। फिर भी वह खुश थी कि पिंकी के ही बहाने वह अपने बचपन की गलियों में विचरण कर सकी। कुछ दिन तो बीतेंगे उन यादों को सहलाते हुए।

❑❑

❍ राँची, झारखंड

आँसु बहावे लागल

अभियंता सौरभ कुमार

जहाँ छनभर तोहके गिरावे में लागल ,
जाने केतना जमाना घरोंदा बनावे में लागल ।

बसल रहे जे मन मे कबो तस्वीर बनके,
आज काहे उ ख्वाब के मिटावे लागल ।

कबो जे बोलावले रहे हँसी खुशी से ,
आज काहे हमसे नजर चुरावे लागल ।

खुशी के बासुरी दुःख के छागल पर बाजी ,
आज सब सुर गजल के तराना में लागल।

कहाँ से सिखीहे हुनर बच्चा जिनगी ,
सभे माई बाप धन कमाए में लागल ।

बड़ी मनमोहक खुशबु आवत बा जवना गुल से,
ना जाने केतना पर्दा छुपावे में लागल ।

असल पैगाम त दिल के पन्ना पर लिखल बा ,
काहे सौरभ आँशु खत के जरा के बहावे लागल।।

❑❑

❍ सिवान, बिहार

राकेश कुमार तिवारी

प्रकृति

जन्म हमनी के देले माई ,
पर प्रकृति ह दूसर माई।
एकरा बिना जीवन सब सुना ,
उपकार एकर ह हमनी प दूना।

जल, फल– फूल, फसल और माटी,
एकरे से मिलेला सब खाटी।
शुद्ध हवा और शुद्ध जल राशि,
पावेले सब पृथ्वीवासी।

पर हमनी के अईसन पापी ,
दोहन करेला दिन और राती।
पेड़ काट के, फसल जार के
नसनी प्रकृति के बार –बार ए।

पावन जल में कपड़ा धोइनी,
माल –गरु के ओह में नहवैनि।
बर्तन माँज के नसनी पानी ,
शुद्ध जल भइल पानी पानी ।

एहीसे हमार बतिया मान ,
माई समान प्रकृति के जान।
सेवा कर एकर दिन अरू राती ,
तब रही ई भविष्य के थाती।

❑❑

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाजियाबाद, उ.प्र.

सुघर आलोचक के सुघर कृतिः पढ़त - लिखत

कनक किशोर

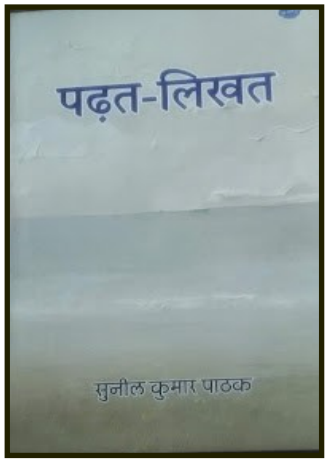

डॉ सुनील कुमार पाठक भोजपुरी साहित्य के एगो सुपरिचित हस्ताक्षर हवें जे गद्य, पद के साथे भोजपुरी आलोचना के क्षेत्र में आपन बरियार उपस्थिति दर्ज कइले बानीं। डॉ नीरज सिंह के कहल ह कि ' भोजपुरी आ हिंदी में संगे – संगे लगातार लिखेवाला आ लगातार बढ़िया लिखेवाला कई लोगिन में एगो महत्त्वपूर्ण नाम डा .सुनील कुमार पाठक जी के बा । उहां के नवीनतम कृति ' पढ़त – लिखत ' के प्रकाशन से भोजपुरी आलोचना के नया दिशा आ दृष्टि मिली।पाठक जी जतने बढ़िया लेखक हईं, ओतने बढ़िया आ गंभीर पाठक आ सबसे बढ़के बहुत बढ़िया आदमी आ मित्र '। ' कुछु लिख दिहीं ' भा ' कुछ लिखा जाव ' के भाव लेके पाठक जी ना चलीं। पाठक जी एगो गंभीर अध्येता हईं आ लिखबो करींला विषय वस्तु के गहराई में डूबिए के ना ओकरा विस्तारो में घूम – टहलके।' पढ़त – लिखत ' पुस्तक दू भाग में विभक्त बा । पहिला खंड में अलग – अलग विषयन प लिखल छः गो आलेख शामिल बाड़न स आ दूसरा खंड में आधुनिक भोजपुरी कविता के समृद्ध करेवाला कुछ प्रमुख रचनाकार लोगिन के प्रकाशित कृतियन पर बहुत गंभीरता से बात कइल गइल बा। पाठक जी के आलोच्य दृष्टि कवनो रचना भा विषय पर आपन विचार ना थोपले रचना के परिवेश आ परिस्थिति के मर्म के समझत ओकर सम्यक मूल्यांकन करेला जे एह संकलन से गुजरला पर महसूस होता।उहां के कहनाम बा कि ' एह किताब के सगरी समीक्षात्मक आलेखन में प्रतिपाद्य विषय भा रचनाकार के रचने के भीतर से ओकर संवेदना आ अनुभूतियन के पकड़े के प्रयास कइल गइल बा,ना कि वेद– पुराण के दर्शन आ पाश्चात्य भा पौर्वात्य पंडितन के भारी–भरकम शास्त्रीय ज्ञान– चिंतन के बल पर भोजपुरी कवियन के लोक– चेतना आ लोक– संवेदना के परखे के कोशिश कइल गइल बा। रचना के राह से गुजरे वाली आलोचने रचना के प्रकृति, ओकर संवेदना, रूचि आ रचाव– एह सगरी उपादानन के प्रति न्याय कर सकत बिया'। आगे इहो कहत बानीं कि कवनो समाज के अनुभूति आ चेतना के मूल्यांकन जब ओह समाज के मापदंडे पर होखी तबे रचनाकार के अभिव्यक्तियन के साथे न्याय हो पाई।साहित्य के परख के इहे गुण इहां के भोजपुरी आलोचना के क्षेत्र में एगो अलग पहचान देले बा। भोजपुरी साहित्य में लिखात बहुत बा बाकिर ओह अनुरूप ओह लिखलकन पर बात–बतकही नइखे हो पावत आ नाही ओकर सम्यक मूल्यांकन होखत बा। अइसना समय में पाठक जी के 'पढ़त–लिखत ' हमनी बीच आके कह रहल बा कि ई सब काल्हु के बात रहे अब पढ़ि के गंभीरता से लिखाती बा।हमरा त ' पढ़त – लिखत ' पढ़ि के भोजपुरी के अनेक विषयन पर बतकही आ कुछ सेसर कृतियन के परख बड़ी सुखद लागल,आत्मीक रसो मिलल।

भोजपुरी आलोचना काल्हु आजु आ काल्हु

आपन कहनाम में पाठक जी भोजपुरी आलोचना पर गम्भीराह पड़ताल कइले बानीं गहराई में जाके। सांच कहीं त एकरा के भोजपुरी आलोचना के संक्षिप्त इतिहास के संज्ञा देल जाय त कवनो अतिसंयोक्ति ना होखी। उहाँ के भोजपुरी आलोचनाध्समीक्षा में का बा? का ओकर आधार होखे के चाहीं? आगे का करे के जरूरत बा? एह सब बिन्दुयन पर आपन बिचार खुल के रखले बानीं।। निश्चित रूप से ऊ बिचार जोग बा आ भोजपुरी आलोचना के आपन राह बनावे में मददगार साबित होखी ई कहल जा सकेला। हमरा समझ से एकरा के तनी अउर विस्तार देके ' भोजपुरी आलोचना के सफर ' भा ' भोजपुरी आलोचना के यथार्थ ' शीर्षक से एगो अलगे आलेख के रूप में संकलित रहित त भोजपुरी आलोचना के हाल – फिलहाल के काम भा छूटल–फटकल सब समेटा जाइत। कुल मिल.ाके आपन कहनाम के बहाने भोजपुरी आलोचना काल्हु,आजु आ काल्हु के सुंदर आ विचारणीय

प्रस्तुति बा पाठक जी के आपन कहनाम। भोजपुरी आलोचना के साथे आपन कहनाम में भोजपुरी साहित्य के इतिहासो पर संक्षिप्त में बात कइले बानीं आ एह बात के स्वीकार कइले बानीं कि जे एगो सच्चाई बा कि भोजपुरी साहित्य के सुव्यवस्थित इतिहास – लेखन के काम अभियो अपना सिरिजनहार के बाटे जोहत दिख रहल बा।बात ई शत् प्रतिशत सही बा। भोजपुरी समीक्षा आ भोजपुरी इतिहास लेखन के आगे के राह पर बिचार करे खातिर आपन कुछ सुझावो देले बानीं। डॉ पाठक के कथन ह कि ' हिन्दी आ भोजपुरी में ई संतुलन आगहूं बनल रही। बात तरफदारी के आई तऽ बचवा माई के अँचरे के मोल चुकाई '। पाठक जी के ई कथन उहां के भोजपुरी प्रेम आ भोजपुरी के प्रति समर्पण के द्योतक बा।

लोकगंधी विषयन प सार्थक बतकही

खंड ' क ' में छव गो लोक से जुड़ल लोक रस – राग में डूबल विषय पर मजीगर आ सार्थक बतकही कइल गइल बा।' मातृभाषा के सवाल ' में माई, मातृभूमि आ मातृभाषा के महता बतावत मातृभाषा के सवाल पर बड़ा गहन बिचार कइल गइल बा। रचनाकार के कहल कि ' अपना मतारी, मातृभूमि आ मातृभाषा से अथोर नेह – छोह आ श्रद्धा रखेवाला मनइये ' विश्वात्मा ' के सच्चा पुजारी हो सकत बा '।लेखक के ई कथन लोक से जुड़ाव के परिचायक बा।एह आलेख में लेखक खाली आपन मातृभाषा के पक्ष में कतहीं खाड़ नइखे लउकत ऊ बात समष्टि के आ लोक हित आ साहित्य हित के करत नजर आवत बाड़न। लोक भाषा के विकास से हिन्दिओ के ताकत बढ़ी एकर प्रमाण देवे के जरूरत नइखे।आज हिन्दी के जे स्वरूप बा ऊ खुद ओकर गवाह बा।' तूहूं बढ़ऽ, फूला – फरऽ आ हमरो के जीये दऽ' के लोक सिद्धांत अपनवले पर हिन्दी आ लोक भाषा दूनों के भलाई बा आ लड़ाई से दूनों दल के हानी होला ई जानल बा। भाषा के बहाने लेखक लोप होत जा रहल लोकभाषा आ लोकभाषा के देश के एक सुत्र में बान्ह के राखे क्षमता पर सार्थक बतकही कइले बाड़न।

' बाबा दुलहा बने हैं ' में नीलहा आन्दोलन जे ' चम्पारण सत्याग्रह ' के नाम से जानल जाला के प्रभाव आ ओकरा से जुड़ल प्रसंगन आ स्वतंत्रता आन्दोलन के दुल्हा गाँधी बाबा से जुड़ल भोजपुरी लोकगीतन के बड़ा रोचक आ यथार्थ परक वर्णन कइल गइल बा।नीलहन के अत्याचार, चरखा के महत्व, विदेशी कपड़न के वहिष्कार, आदि से जुड़ल सुराज के अलख जगाने वाला लोकगीतन के जरिए ' चम्पारण सत्याग्रह ' के सफलता आ संदेशन के समझे, परखे आ मूल्यांकन के सार्थक प्रयास कइल गइल बा।

1857 विद्रोह के अस्सी बरिस के महान योद्धा,कुशल प्रशासक आ सच्चा देश भक्त बाबू कुंवर सिंह के गौरव गाथा भोजपुरी लोकगीतन आ साहित्य में मिलेला। ओहि गौरव गाथा पर विस्तार से बात लेखक ' धन भोजपुर धन भोजपुरिया पानी, अस्सी बरिस में चढ़ेला जवानी ' में कइले बानीं। होली, जोगीरा, चौता, बिरहा, पचरा, धोबी गीत,पाँवरिया गीत, मानर, पँवारा, प्रकृति गीत, खेल गीत, लोकगीत आ लोकगाथा में कुंवर शौर्य गाथा के गीतन के परितोख के साथ रखत आधुनिक भोजपुरी साहित्य में कुंवर सिंह के चरितनायक बनाके प्रबंध काव्य आ नाटकन के बढ़िया जानकारी बड़ा विस्तृत रूप में प्रस्तुत कइल गइल बा एह आलेख में। भोजपुरी क्षेत्र के स्वातंत्र्य चेतना पर कुंवर सिंह के नायक बना बात करत लेखक के एगो प्रस्ताव बा कि भोजपुरी क्षेत्र के विरासत, ऐतिहासिक परम्परा, सकारात्मक प्रतिरोधी संस्कृति के पुनर्मूल्यांकन होखे के चाहीं। निश्चित रूप से एह तरह के खोज – खबर लेला से, शोध कइला से माटी में दबल ढेर सांच सामने आई एह में दू मत नइखे।

' एही ठैंया झुलनी हेराइल हो रामा ' में रचनाकार ' चइता ' भा ' चौती ' लोकगीत पर सारगर्भित बतकही कइले बानीं। लेखक के कहनाम, लोकगीतन के जेतना ले विभेद बा ओमें' चौता ' ले जादा मधुरता, सरसता, कोमलता, आ भावप्रणवता कवनो दोसर शैली में ना मिली। ' चौती ' के सरसता में घुलल मानव मन के जवन तरलता, उछाह, बाँकपन, भंगिमा आ वियोगजनित विरह भावना बा,ऊ कहीं ना मिली '। वसंतध मधुमास के प्रोढ़ महीना चइत जेह में मादकता चरम पर रहेला, विरह सहले ना सहाय एही से उत्पाती के संज्ञा देल गइल बा। उत्पाती के नू लक्षण ह कि केकरो झुलनी तो केकरो नथिया हेरा जाता आ मादकता अइसन की केहू चइत के झकोर देवे पर राजी नइखे होत।खाली सिंगार आ विरह के भाव चइता अपना में ना समेटले रहेला, ऊ अपना में पापी देवरा, सुघरी ननदिया, भउजी के छेड़छाड़, राधा कृष्ण के मनुहार, राम जन्म के उल्लास, निर्गुण सगुण के बखान, भक्ति भावना आ गार्हस्थिक जीवन के हास – परिहास समेटले रहेला।पाठक जी के एह आलेख से गुजरला पर चइता के ई सब रूप देखे के मिलत बा साथे चइता/चौती के विभेद से अवगत होखे के पाठक के मिलत बा।चइता के भावाभिव्यंजना में लाक्षणिकता आ बिम्बात्मकता के

भरमार रहेला जे आलेख में उद्धृत चइता गीतन के देखे से स्पष्ट बा। ' बासमती चाँदनी उबीछ दीं त कइसे ' में रचनाकार भोजपुरी में नवगीत के सिरिजना पर बात कइले बाड़ें। गीत के शिल्प पर लोकधुन,लोक छंद आ लोक कला के असर रहेला। गीत करवट बदल नवगीत के रूप में आवे के क्रम में जवन जतरा कइलस, हिन्दी नवगीत के सफलता के प्रभाव, हिन्दी नवगीत से अलगाव के बिन्दु, भोजपुरी नवगीत के सफर आ ओकर सफर में सहायक रचनाकारन के साथे भोजपुरी नवगीत के समृद्धता पर गहन आ शोध परक तथ्य एह आलेख में रचनाकार बड़ी सटीक ढंग से प्रस्तुत करे में सफल बाड़ें।ई निश्चित रूप से पाठक जी के पढ़त – लिखत फार्मूला के प्रतिफल ह।

' कोरोजीवी कविता भोजपुरी के ' में लेखक कोरोना काल के संबंधित भोजपुरी काव्य संसार पर बढ़िया विमर्श कइले बानीं। भोजपुरी साहित्य कोरोना काल के नीमन आ बाउर दूनों परिस्थिति के गवाह रहल बा।रचनो नीमन आ बाउर दूनों भइल बा।समीक्षक आलेख में स्पष्ट कर देले बाड़ें कि विषय पर बिचार करत खा खाली कोरोना पर लिखल कविते पर ना करोना मानवेत्तर प्रकृति पर पड़ रहल सब प्रभाव आ ओह से जुड़ल संवेदना आ अनुभूतियन के अपना अध्ययन में शामिल कइले बाड़ें। कोरोजीवी कविता के मतलब कोरोना पर समग्रता में काल चिंतन करे वाली कविता से लिहल गइल बा। आलेख में दूगो कमी नजर आवत बा।पहिलका की आलेख में कोरोना काल के भोजपुरी साहित्य के कोरोजीवी काव्यन के समग्रता से ना समेट के टापा – टोंइया उठा के बिचार कइल गइल बा। मुख्यतः खाली भोजपुरी जंक्शन के कोरोना विशेषांक पर केंद्रित रह के।दूसर की आलेख पुरान बुझात बा जवना में कोरोना के आफ्टर इफेक्ट्स में आवेवाला समय आ समाज के जवन रूप रंग के देखावल गइल बा, कल्पना कइल गइल बा ऊ कागज पर सुंदर जरूर लागत बा बाकिर आजु के समय के सच्चाई से दूर बा। कवि के कल्पना खातिर ऊ सही आ साकारात्मक कहल जाई बाकिर आलोचक आ समीक्षक खातिर ना।एह खंड के दूसर आलेखन के अपेक्षा ई आलेख निश्चित रूप से कमजोर लागत बा।कोरोजीवी कविता के व्यापक फलक आ संरचना में विविधता के देखत समीक्षक के बिचार के सपाट बयानी त ना कहल जाई बाकिर आलेख खातिर तनी अउर विषय वस्तु के गहराई में जाके मोती इक्कठा होखित त विषय पर बढ़िया बतकही पढ़े के मिलित।

बड़ कठिन कर्म आलोचना जानीं

समीक्षा/आलोचना एगो कठिन काम ह। रचना के चहुंओर रचनाकार के उपस्थिति कवना रूप में, केह तरह से आ कहाँ – कहाँ हो सकेला के सारे रचना के मर्म समझल एगो कठिन काम ह। आलोचक के एह दुरूह कार्य के करे खातिर लेखक के मन पढ़े के,ओह परिवेश आ राह के समझहीं के ना पड़े रचना कर्म के विभिन्न पड़ाव, लेखक के जीवन अनुभव के दायरा के भूगोल के फैलाव, रचना के सामाजिक यथार्थ के पड़ताल गहराई से करे के पड़ेला।तब जाके आलोचक रचना के बढ़िया से समझे के नजदीक पहुंच पावेला। अब सवाल उठत बा कि अइसन कठिन आ मेहनत के काम आलोचक काहे खातिर करे? हमरा बुझात बा अइसन काम करे से आलोचक आपन रचनात्मक दुनिया के त आकलन करबे करेला साथे ओकरा के रचनात्मक दुनिया के नया चीजन से अवगत होखे के मौका मिलला। पाठक जी जस आलोचक जे खुद लेखन के दुनिया में गहिरा पैठ राखेला के एह आलोचना कर्म से रचनात्मक परिपक्वता तनी अउर समृद्ध हो जाला।अब बुझाइल ' पढ़त – लिखत ' के रहस्य। एह पुस्तक के खंड ' ख ' में पाठक जी भोजपुरी के पनरह गो वरिष्ठ आ पुरोधा रचनाकार के व्यक्तित्व आ कृतित्व भा चयनित पुस्तक पर आपन गहिर समीक्षात्मक नजर डालि परोसले बानीं। भोजपुरी माटी, भोजपुरी संस्कृति आ भोजपुरी भाषा के सपूत डॉ रामविचार पाण्डेय जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर सारगर्भित आलेख ' बिसरइह जनि जब चलि जाईं ' में रखल गइल बा।एह आलेख में पाण्डेय जी के अकूत कविताई के बहुत सुंदर परिचय प्रस्तुत कइल गइल बा। अनिरुद्ध जी भोजपुरी साहित्य संसार के एगो अद्भुत गीतकार रहलीं। ' चहकत प्रान मधुप मन डोलत ' में लेखक अनिरुद्ध जी के भोजपुरी गीतन के काव्य गरिमा आ शिल्पगत निपुणता, बहुरंगी विविधता पर आ गीतन के प्रकृति पर जमके बतकही कइले बानीं जेकरा में कवि के सामाजिक बोध आ प्रकृति से लगाव के बड़ा प्रखर रूप देखे के मिलत बा। ' हम त राही हईं, रूकीं कबले ' में पाठक जी के संस्मरणात्मक आलेख ह।एह आलेख में अपना संस्मरण के बहाने भोजपुरी आंदोलन आ रचनाधर्मिता दूनों एक साथे गंभीरता से साधेवाला पुरोधा पाण्डेय कपिल के काम करे के तरीका आ भोजपुरी आंदोलन में उहां के सक्रियता प विशेष प्रकाश डलले बानीं। ' पढ़त – लिखत रहीं,गुनत – मथत रहीं ' में रचनाकार भोजपुरी पुरोधा अक्षयवर दिक्षित के कृतित्व पर संक्षेप में बात रखत उहां के प्रथम कृति ' अ॑ऊँ ' में शामिल एगारह गो कविता आ मुक्तक पर आपन विचार विस्तृत रूप से रखले बानीं।

' सूरज के माथा से चुअल धूप के पसेना ' आलेख में

लेखक प्रो. ब्रजकिशोर जी से जुड़ल अपना संस्मरण के रखत उहां के कृति ' जोत कुहासा के ' आ ' बूंद भर सावन ' प बड़ी विस्तार से बतकही कइले बानीं। सांचे कविता आ ओकर रचयिता कवि के काव्य निपुणता के अस्वाद पाठक के समक्ष बढ़िया से रखे में रचनाकार सफल रहल बाड़न। भोजपुरी पुरोधा चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह ' आरोही ' के कविता संग्रह ' माटी कहे पुकार ' पर लेखक गंभीर बतकही विस्तार से कइले बाड़ें आलेख ' तन के दीप नेह के बातीध जरी देस खातिर दिन राती ' में। चौधरी जी के कवितन में कल्पना से अधिका यथार्थ के आ भावना से अधिका विचार के प्रमुखता, प्रकृति वर्णन में चित्रात्मकता आ मानवीकरण अउर जीवन के संघर्ष आ चुनौतियन के झलक मिलत बा आलेख के उद्धृत कवितन में। सूर्यदेव पाठक ' पराग ' साहित्य में पांडित्य आ आचार्यत्व के साथे लौकिक जीवन के सच्चाई आ अनगढ़ सौन्दर्य के प्रतिमूर्ति हईं जे हिन्दी, संस्कृत आ भोजपुरी के संगम में डूबकी लगा मोती चुनेवाला व्यक्तित्व के रूप में आजुओ माई भाषा के भंडार भर रहल बानीं।' विचार के झोरी जथारत के जमीन पर ' में लेखक उनके साहित्यिक योगदान पर बात करत उहां के भोजपुरी काव्य के मूल्यांकन दिसाई सार्थक प्रयास कइले बानीं। पराग जी के भोजपुरी काव्य संसार पर सांगोपांग विमर्श एह आलेख में एक जगह देखे के मिलत बा। ' सुर में सब सुर ' में ' तैयब हुसैन पीड़ित ' के दूगो कृति ' सुर में सब सुर ' आ ' अनसोहातो ' में संग्रहीत काव्य पर गहिरगर विमर्श कइल गइल बा। आलेख में उद्धृत कवितन आ विमर्श में आइल बिन्दू सब ई प्रमाणित करे में सफल बा कि तैयब देश, समाज आ समय से जुड़ल एगो जागरूक कवि हवें जेकर कविता अपना में आम मनई के जिनिगी के सुख – दुख, संघर्ष आ प्रतिरोध समेटले रहेला।

एही तरे ' कवि! तू धरती राग लिखऽ ' अशोक द्विवेदी के कृतित्व पर बात करत उहां के कविता संग्रह ' कुछ आग कुछ राग, ' खरकत जमीन आ बजरत आसमान ' में ब्रजभूषण मिश्र जी के काव्य संग्रह ' खरकत जमीन, बजरत आसमान ' , ' गजल जौहर के जिनगी हऽध गजल जिनगी के हऽ जौहर, में जौहर शफियाबादी के कृति ' रंगमहल ' , ' कविता त छछनत मन के अंजोर हऽ' में भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के ' जौ – जौ आगर ' , ' नया जमाना के सोच सगरीध गजल के तेवर पलट रहल बा ' में तंग इनायतपुरी के गजल संग्रह ' सियासत में गजब बा नाम राउर ' , ' जतिए भइल जहमतियाध ना ढोअले ढोआला इजतिया ' में बलभद्र के ' कब कहीं हम ' आ अंत में ' कविता के अरज – निहोराध ' अरज निहोरा ' के कविता ' में प्रकाश उदय के ' अरज निहोरा ' के केन्द्र में रखिके संबंधित कविता संग्रहन पर त बतकही विस्तार से कइल गइल बा साथे ओह संग्रह के कवितन के शैली, भाषा, तकनीक, काव्य में उपलब्ध प्राण तत्व, कविता के समय, समाज आ लोक जुड़ाव, जीवन संघर्ष, राजनीतिक आ वाद के प्रभाव, गाँव , घर, माटी से जुड़ाव, प्रकृति वर्णन, कविता के निपुणता के मानक मापदंड पर कसावट आदि पर गंभीरता से बिचार आलोचक एह आलेखन में कइले बाड़ें।एह सब के अतिरिक्त सब आलेख में कविता के गुणवत्ता के हिन्दी कवितन से तुलनात्मक अध्ययन समीक्षक रखले बाड़ें जे समीक्षा के वजनदार बनावे के साथे इहो बता रहल बा कि आजु के भोजपुरी कविता कतना पानी में बा आ अगर कमी बा त दूर कइसे होखी।

सुघर आलोचक के सुघर कृति

आलोचना/समीक्षा एगो कठिन काम ह एह ओर बात ऊपर राखल गइल बा। बाकिर तबहूं फेर से कहल चाहब कि आजु के दौर में आलोचक के जिम्मेदारी पहिले के तुलना में ढेर बढ़ गइल बा। साहित्य में आइल गिरावट के चलते आलोचक के जिम्मा खाली विवेचना – विश्लेषण के काम नइखे रह गइल, रचना के छांट – बांट के कामो देखे के पड़त बा।पाठक जी जस सजग आ प्रबुद्ध आलोचक एह संकलन में बखूबी एह काम के अंजाम देले बाड़ें।आजु के दौर में जहाँ आलोचना संबंध – संपर्क के गंभीर बीमारी से ग्रसित होके संबंध – संपर्क के लेखकन के रचनन में सब खूबी खोजे में व्यस्त बा ओहिजे पढ़त – लिखत ' के माध्यम से निपुण भोजपुरी साहित्य(कविता)के खोज भोजपुरी हित के बात करत पाठक जी के उपस्थित देखि सुघर आलोचक के संज्ञा देल कवनो गलत ना होखी।। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहले बानीं कि आजु के आलोचक त पुस्तक के बिना पढ़ले ओकर आलोचना कर देला उहो कि त्रैलोक्यविकंपित ! ' पढ़त – लिखत ' में पाठक जी के आलेखन से गुजरला पर बुझात बा कि पाठक जी खाली पढ़िए के ना ओकरा के मथियो के विश्लेषण कइले बाड़ें।इहो कहल गइल बा कि जे आलोचना कवनो राजनीतिक मतवाद से प्रेरित होला ऊ साहित्य ना होखे, राजनीति होला। पाठक जी के समीक्षा के नजरिया कवनो वाद से प्रभावित नइखे लउकत एकर गवाह संकलन खुद बा। संकलन में संकलित आलेखन खातिर चयनित कवि भा चयनित पुस्तक के बहाने पाठक जी भोजपुरी काव्य संसार के दसा – दिसाई एगो यथार्थ परक विश्लेषण प्रस्तुत कइले

बाड़ें जहाँ जगहा मिलल बा जेकरा से आम पाठक के भोजपुरी कविताई का रहल बा आ आजु का का हो रहल बा के सुघर जानकारी मिलत बा। संकलन के भाषा सरल आ ग्राह्य बा। आलोचना/ समीक्षा में पाठक के रस के अभाव लउकेला बाकिर पाठक जी के एह संकलन से गुजरला में कतहीं मन उबत नइ खे। संकलित समीक्षन में पुरजोर पाठनीयता बा त ओकर कारण भाषागत बहुस्तरीयता बा आ इहे सं. कलन के सुघरता बा।पाठनीयता कवनो रचना के सफलता के विशेष मानक होला,ई संकलन एहू दृष्टिकोण से सफल बा। भोजपुरी साहित्य में एह तरह से पढ़त – लिखत चलला से भोजपुरी समृद्ध होखी एह में दू मत नइखे। पाठक जी के एह संग्रह के पुरजोर स्वागत होखे के चाहीं भोजपुरी जगत में।एह संकलन के देखि त बोलहीं के पड़ी ' जय भोजपुरी '।

पुस्तक के नाम – पढ़त – लिखत
लेखक – सुनील कुमार पाठक
विधा – भोजपुरी समीक्षा
प्रकाशक – सर्व भाषा ट्रस्ट,नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या – 248
मूल्य – सजिल्द – ४६६/–
अजिल्द – २६६/–

❑❑

राँची,झारखंड

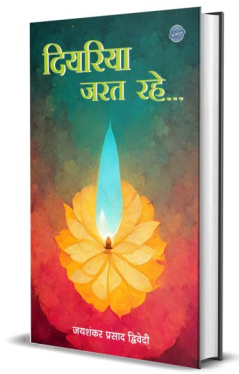

सारिका भूषण के दू गो कविता

सारिका भूषण

प्रकृति के नियम

अम्मा बूढ़ा तरी
बाबा भी बूढ़ भईलन
चुभे ला
प्रकृति के ई नियम
चुभे ला
उनकर शिथिल भईल
पर हम खुद के देखेनीं
तब डर जाइला
इहे सोचकर
कि हमार उमर में
दूनो जना
ज्यादा जीवट रहन
जे हम आज बानी
तब तो ना रहे
ई सुख सुविधा
फिर हमनी के का होई
आपन–आपन सुख भोगत
उनकर उमर में पहुँचके ।

जिंदगी के लडाई

देवता दूआरी
हम मन्नत माँगब
भोले बाबा भिरी
सर पटकब
तुलसी चौरा पर
दियरा बारब
अँचरा के कोर से
लोर पोछब
सलामती खातिर
ललका मिरचौया, सरसों अउर नून से
नजर उतारब
तोहरे नाम से
भजन–किरतन करब
गंगा मईया के
पियरी चढ़ाईब
पर एकरा से ज्यादा
हम कुछ ना कर सकेनी
काहे कि ऐ बबुआ
जिंदगी जिये खातिर
आपन–आपन लड़ाई
खुद ही लड़ेके पड़ेला ।

❑❑

राँची,झारखंड

जिद पर जीत

डॉ रजनी रंजन

मनी के घाव अठारह बरस पुरान भ गइल रहे ।मन बहुते दुखी रहे लेकिन मन पर पत्थर रखके जिए के रहे। घर के लोग बुझत रहे कि अठारह साल हो गइल अब दुख पर माटी जम गइल होई बाकिर माटी के भीतर के दहकत लावा अइसन मनी के मन आजुओ दहकत रहे। मनी चाह के भी अपन बेटी में अपन शैतान पति के झलक ओकरा में देख के बिसरा ना पावत रहली।

18 साल के रेवती देखे में त माई अइसन खूब सुंदर रहली बाकी बड़ी जिद्दी रहली। उनका जिद के आगे कोई के ना चलत रहे। ननिहार में बिना बाप के बेटी के खूब दुलार मिलल। ओकर ई नतीजा रहे कि रेवती स्वभाव से बिगड़ैल बन गइली। मनी के कभी–कभी आपन बेटी के जिद में दरिन्दा पति के झाँक आवे। अइसन स्थिति बनते मनी बेचौन हो जास।आपन दहशत के दिन इयाद आ जात रहे। माई–बाप के एगो दुलारी धिया के बियाह बड़ी जो ख–सोच के लगहीं गाँव के अमीर परिवार राजभर सिंह के एकलौता बेटा से तय भइल। राजभर सिंह के शान आस–पास के गाँव में खूब रहे। उनकर खेत खरिहान में खटे वाला मनई उनका बेटा के सोभाव बूझत रहलन बाकिर कहावत बा कि 'दुधार गाय के लातो मीठ' एही से कोई सिंह जी से उनका बेटा के शिकायत ना करत रहे। एने मनी के बाऊजी भी अपना बेटी खातिर खूबे जाँच पडताल कइलन बाकिर सेवक लोग सिंहजी के नाम पर खूब तारीफ करस। केकरा आपन रोजी पर लात मारे के रहे! एगो बभन सिंह रहले जे लगहीं गाँव के रहनिहार रहले उ तनि दबते जबान से इशारा कइलन– ''राजभर के जबाब नइखे बाकिर नवका पीढ़ी के लइकन के हमनी के बूझिये ना पाइले तनी रउआँ अपनहूँ परख लेब''।

बभन सिंह के बात मनी के बाऊजी हलके में लिहले। खूब धूमधाम से बियाह हो गइल। बाकिर मनी के दुलहा भूपेश के बेवहार मनी के साथ फिट ना बइठल।मनी जेतना पढ़े में तेज ओतनही काम–धाम में भी, बाकिर भूपेश के पढ़ाई कसहूँ निपटत रहे। नौकरी खातिर तइयारी के नाम पर खाली शहर जाके मजा। मनी ससुरारी में रहके, सब काम–धाम निपटा के आपन पढ़ाई करस आ बढ़िया नंबर से बीए पास कइली। ई दु साल में ऊ भूपेश के तनि तनि बूझे लगले रही। एहिसे जिद करके आपन पढ़ाई आगे करे खातिर सास–ससुर के मना लिहली। हालांकि भूपेश के कोशिश रहे कि ऊ आगे ना पढ़े लेकिन राजभर सिंह के आगे उनकर ना चलल।

आगे के पढ़ाई करके मनी बैंक में नौकरी करे लगली जबकि भूपेश आपन असफलता के छीकरा मनी के ऊपर गलत–सलत इल्जाम लगावत फोरे लगलन।कड़वाहट दुनों मन में जाग गइल रहे बाकिर सामाजिक सरोकार के चलते सथहीं रहत रहे लोग। माई–बाप के इज्जत आ सास–ससुर के दुलार के कारण मनी पति के सब गलती माफ करके जिनगी के गाड़ी कसहूँ खिंचत रहली। घर के बड़ बुजुर्ग के कहनाम रहे कि बाल–बच्चा के अइला के बाद सब ठीक हो जाई बाकिर ठीक भइल ना। एही बीच रेवती के जनम हो गइल। रेवती के जनम पर भूपेश के भीतर भरल जहर भाव बाहर आ गइल – हमार खून से बेटा पैदा होइ इ बेटी हमार ना हिय। सास–ससुर बहुत समझवले आ बेटी के मान देवे के सिखवले बाकिर सहकल मन के कवन गोसा. ई? जे तनि मनि बचल खुचल रिश्ता रहे ऊ बेटी के अवमान से खतम हो गइल। धीरे धीरे दुनो परानी में सब खतम होखे लागल।हद त तब भइल जब एकदिन रेवती पापा–पापा करत आपन माटी सनल हाथ से भूपेश के पकड़ लेहली – ''हट!भाग! साफ कपड़ा गंदा क देलस ''कहके अइसन हाथ से झटकले कि बेटी फेंका गइली आ कपार फूट गइल। खून बहत देख के भूपेश के माई चिलइली– 'हे भगवान! काहे एकरा के संतान देहनी एहसे अच्छा रहित कि इ बाँझे रहित'। बेटी के अवमान के ई खबर आग नियन सगरो फइलत मनी के बाऊजी तक पहुँच गईल। उनकर बाऊजी दउड़ल अइलन। आपन बेटी आ नातिन के हमेसा खातिर अपना साथे ले गइलन। राजभर सिंह भी बेटा के रहन से दुखी रहलन एहसे कुछ ना कहलन ना मनी के जाए से रोकलन।जाए घड़ी बस एतने कहलन– जब मन करे बाऊजी से मिले के आ जइह भा खबर भेजइह हम आ जाएब।

बाप के एगो करनी ओकरा मन में नफरत भर देले रहे। कभी–कभी दादी–दादा आवे लोग बाकिर बाद में उहो खतम हो गइल। अलग भइला के बाद सात साल बीत गइल फेर बिना कवनो लाग लपेट के दुनो के तलाक हो गइल। खबर मिलल कि भूपेश के कैंसर हो गइल बा आ उ जिनगी के दिन गिनत बारे लेकिन मनी अब आगे बढ़ गइल रही एहसे उनका ऊपर ई खबर के कवनो खास असर ना भइल।

मनी अपना पैर पर खड़ा रहली एह से उनका कवनो दिक्कत ना भइल। नातिन खातिर नाना भी कुछ जमीन खरीद के रख देलन। नातिन नाना घर में खूब दुलार पावे। एहिसे ऊ बड़ी जिद्दी निकल गइल। मनी बड़ी समझावस लेकिन ओकरा माथा कुछुओ ना घुसे।

एकदिन खिसिया के घर से निकलल आ जाके गंगा घाट पर बइठ गइल।जरत चिता के देख के तनि डेराइल बाकिर जिद पर भय का? उ लगहीं बइठल लोग के पीछे तनी दूर जाके बइठ गइल। मन बनवले रहे कि गंगा नदी में आज जिनिगी के अंत करब। भीड़ छँटे के इंतजार रहे। अचानक ओ. करा कान में सुनाइ पड़ल –''आदमी अपना जिनगी के खुदे जहर आ चाहे मनहर बनावेला। इ आपन जिनिगी के खुदे जहर बनवलस। माई–बाप के बात ना सुनलस आ माई कलपत कलपत सिधार गइल. ी। एतना सुघर,सुंदर आ कमासुत लइकी के इज्जत ना कइलन। हार–पाछ के उ अपना नइहर चल गइल।जवन बेटी के बाप कभी आपन ना मनलस उहे बेटी खातिर माई सब त्याग के, ससुरारि से नाता रिश्ता खतम कर देलस। हमरा इयाद बा जाए घड़ी ऊ दरवाजा पर खड़ा होके राजभर सिंह से कहली – ई अबोध हमार जामल ह ,आज से हमहीं एकर माई–बाप दुनो रहब। बाबूजी अब हमरा के मत रोकीं ना त घुट–घुट के हमहीं मर जाएब तऽ हमरा लइकी के के देखी?ओहदिन तब राजभर सिंह कुछ बोल ना पवले। पोती आ पतोह के आशीर्वाद देके भेज देहले।अहम से भरल मनई के हीरा आ माटी एके लागेला। भूपेश अहम के मनई रहले।बीबी आ बेटी के गइला के बाद कुछ दिन खूब मजा कइले।सगरो आपन कनिया के छिछ. ालेदर कइलन बाकिर भगवान उनका के जे सजा देहलन कि आज गतिये पा गइले।ओह! सुघर कनिया के तड़पल मन के डहक उनका पर पड़ गइल। खुदे आज चल गइले बाकिर बूढ़ बाप के भी उनके करनी के फल भोगे के पड़ल बा जे बेटा के आगुन देले।हे विधाता! रक्षा करीं मलिकार के।''

रेवती आपने घर के कथा सुनत रहली बाकिर कुछ कह ना सकली। जल्दी से उठली आ दउड़त घर पहुँचल। माई बैंक से अबहियें लउटल रही ।बेटी के देखते खिसियाइल कहे लगली– का चाहतारु! काहे अइसे करतारु?देखऽ तऽ! सभे तहरा कारण दिन भर परेशान रहल ह। रेवती हाथ जोड़के कहली– हमरा ठीक ना लागल ह। नानी डाँट लगवली आ तुहूँ....। हुँह! हम कुछो करेनी तऽ ''बाप पर गइल बारी'' बोलऽ तनी तुहूँ तऽ बेवजह सेनुर बिछुआ आ चुड़ी पेन्हले बारु। तूँ उनका के नइखे भुलाइल बारु एहिसे सब उनहीं जइसन तहरा हमरा में लउकेला।उतार सकेलू एकरा के? तऽ हमरो जिद आज से खतम हो जाई हम बचन देत बानी।

बेटी के बात सुनके मनी तुरते सेनुर पोंछ देली, बिछुआ आ चुड़ी उतार देली। रेवती कहली– पुरान सब खतम भइल अब सब नया होई।

रात में सुते घरी रेवती माई से लिपट के सुतत रही। अचानक मनी कहली– अच्छा! साँच बताव। कहाँ रहली ह एतना देर। बेटी के सबुर के बाँध टूट गइल।सब कहानी माई के सुना देहली। माई के अँकवार में पड़ल कसाव साफ बतावत रहे कि हम तहरा साथे रहब।उ गइलन त का भइल! मनी बड़ी सांत रहली।उनका बेटी के बात से ओकर समझदारी साफ लउकत रहे। उ आँखि में समन्दर भर के भी उफान के रोकले रही पर कहली काल्ह माई–बाऊजी के साथे उहँवा जाए के होइ। सबेरे उठ जइह। अकेले बाबूजी का करब। रिश्ता टूट गइल बाकिर उ बूढ़ मन के नेह अभियो कवनो कोर में बँचल बा।

❑❑

घाटशिला, झारखंड

स्नेहा मिश्रा

माई से बिछुरल लइका के देखनी ह

भूख आज अंखिया में उतरल देखनी ह,
माई से बिछुरल लइका के देखनी ह।

रोटी तरकारी त बेरा–बेरा उनके मिलेला,
लेकिन केहू ना पूछे कि मनावो आछो होखेला,
रोज नहाला लेकिन केहू बार स्वादे ना ओकर ,
होठ घुरैल बा कि थकल मुँह निहारे ना ओकर ,
धरती पर ममता के सुतल ,
माई से बिछुरल लइका के देखनी ह

एगो क देखनी ह भगत रहल ह,
जाने का जिनगी से चाहत रहल ह,
सुट–बूट आ बेल्ट लगवले रहल ह,
निमन ब्रांड के सेन्ट लगवले रहल ह,
दांत निपोरत रहल ह हर बाते पर,
लेकिन चिन्ह उखरत रहल ह माथे पर,
बद्री सा उमरत अंखियों में देखनी ह,
माई से बिछुरल लइका के देखनी ह.

हिट–मिट ओकरा लेगे सभे बाटे,
लेकिन केहू खालीपन ना बांटेला,
लगे कहकहा लोन में सगरी मिटे संग,
जल्दी सुते खातिर नाहीं दातेला,
काच–कुछ केहू ना कपरा पर करे,
सबसे कह के भी मन ना धीरज धरे,
कंठ रूंहेल अखत रतिया देखनी ह,
माई से बिछुरल लइका के देखनी ह।

❑❑

भाटपार रानी देवरिया
उत्तर प्रदेश

अरमान दिल

दीपक तिवारी

अरमान दिल के

के चकनाचूर हो गइल,
जबसे बलमुआ हमसे दूर हो गइल।
अरमान दिल के चकनाचूर हो गइल,,

खइते बलम जी हम बेनिया डोलती,
मंगते जे पानी लोटा भर के लेयइती।
जाने कहाँ लुप्त मय नूर हो गइल..
जबसे बलमुआ हमसे दूर हो गइल।

बहरी से अइते नाँव धई के बोलइते,
सर समान के झोरा हमके थमइते।
ख्वाब के महल छन में धूर हो गइल..
जबसे बलमुआ हमसे दूर हो गइल।

रहे परी मन मारी जबले ना अइहे,
बाटे विश्वास दीपक श्रद्धा पुरइहे।
हँसी खुशी जिनगी से फुर हो गइल..
जबसे बलमुआ हमसे दूर हो गइल।

❑❑

श्रीकरपुर,सिवान

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यागन

राधा

केशव मोहन पाण्डेय

1

सिंगार पटार के धार नाहीं
बाकी रूप अनूप ले आ गइली राधा।
गइया गउरइया गोपाल संघे
नंदलाल के देखी लोभा गइली राधा।
चाहे नाही बाकी माने नाहीं मन,
प्रेम के गंगा नहा गइली राधा।
रूप के राशि कन्हाई सखी
ठग के ठगला में ठगा गइली राधा।।

2

जीत ना हार ना प्रेम ना रार,
नया नेह धार ले के अइली राधा।
अइली त अइली कमाले त कइली,
जगतपती प लोभा गइली राधा।
पावल खाली ना प्यार हवे
तप त्यागो ह प्यार, सीखाऽ गइली राधा।
अनंत, अखंड, अभेद, सुवेद,
ऊहे सार तत्त्व, कहा गइली राधा।।

3

इंगुदी गंध वैजयंती के माला से,
टेशू से रूप सजावेली राधा।
पपनी–पुतरी आपन टेढ़ क के,
सोझ नेह के गेह बनावेली राधा।
बहनी में सखी अपना दही के
श्री श्याम के नाच नचावेली राधा।
प्रेम कइले कान्हा चोरी ना कइले जी
नाहक चोर बनावेली राधा।।

4

कारी रतनारी दुधारी सखी
कजरा वाली नैना नचावेली राधा।
पालत पोसत पावन प्रेम के
नेम–नाता समुझावेली राधा।
दैहिक होखे भा दैविक हो
पुनि प्रेम के पाँत सजावेली राधा।
त्याग के राग अलापें भले रोज
नेह से काग उचारेली राधा।।

5

ई लरिका के कबो परिका के
नाही टरिकाव तू आव हो राधा।
काज पड़े जो गोहार करे
कबो धाई के आव बंचाव हो राधा।।
साँस रहे उच्छवास रहे त
दुलार लुटाव न मुआव हो राधा।।
'केशव' पर किरिपा करीह
ना कबो कल्पाई–रोआव हो राधा।।

6

देवता दानव दुष्ट दयालु
कृपालु रहेली सबका पर राधा।
प्रेम आ भक्ति में भींजत भाव के
घाव सहेली सुखकर राधा।
नैन से नीर झरे ना झरे
नित् नित् नव लागेली निर्झर राधा।
साँवर–गोर के बात नाहीं
बाड़ी सुंदरतो से त सुंदर राधा।।

7

शीतल मंद, सनल मकरंद, स-
वछंद बयार से लागेली राधा।
कुंद–मुकुंद के साथे सुगंध के
फूल के हार से लागेली राधा।
रंग के ढंग के रंग–रंगीला
परब त्योहार से लागेली राधा।
पावन धार से जीवन सार से
स्वर्ग दुआर से लागेली राधा।।

8

हिले मन तार मिले प्रेम धार
इहे जग सार सिखावेली राधा।
कुल्टा केहू लाख पापी केहू
त करे प्रेम पुण्य बतावेली राधा।
राधा के कान्ह त कान्ह के राधा
हर हाल ई वादा निभावेली राधा।
साथ रहें भा असाथ रहे भा
मुरारी के प्यारी कहावेली राधा।।

9

मंगल मूरत मोहन सूरत
जानी जरूरत लोभा गइली राधा।
रीति रिवाज के कुल के लाज के
बान्हा के तुरत आ गइली राधा।
ना कवनो दर्प ना दुख–दरिदर
प्रेम के गंगा बहा गइली राधा।
नेत अनेत के गीत नाही साँच
प्रीत के दीप जरा गइली राधा।।

10

साँवर गोर के बात नाही
खाली प्रेम के नेम में बावली राधा।
कान्हा कबो शुद्ध गोर लगें
कबो लागेली झाँवर साँवली राधा।
देखीं पावन प्रेम के पावनता
मनभावन के मन भावेली राधा।
काला कलुठा कहे लोगवा
तबो कान्हा कान्हा गीत गावेली राधा।

11

साँवर गोर ना, ढेर ना, थोर ना,
चाहेली खाली कन्हाई के राधा
मुँहचोरी नाही, सीना जोरी नाही,
नाही चाह बाटे चतुराई के राधा
त्याग रहे अनुराग सदा
गीतिया बनि गइली सु–गवाई के राधा
तुक ताल नाहीं, ना बवाल नाही,
खाली चाहेली कृष्ण–कन्हाई के राधा।

12

लोग कहे केतनो कतहूँ,
करतार से तार जोड़ावेली राधा
पावन पुष्प ईयाद नाहीं,
अँखियाँ–जल हार चढ़ावेली राधा
राधा बिना कहाँ कान्हा बाड़े,
इहे बात बिचारी उचारेली राधा
राधा राधा जे जपे जग में,
मग–जीवन ओके सँवारेली राधा।।

❑❑

राजापुरी,नई दिल्ली

आशा रानी लाल

खोज

सभे लोगिन अइसन आज कई दिन से हमरा अपना गाँव के बारे में कुछु लिखे आ बतावे के मन करता। बाकी कवना गाँव के अपन कहीं, इहे नइखे बुझात। मन में बहुते बिचार आवता, एह बिचार के उठते ओह पर पाला पड़ जाता। सोचतानी कि जहाँ जनमलीं, उहे न हमार गाँव होई। एह पर माई बतवलस कि– तोर जनम त नानी घरे भइल रहे। माई आ दादी घरे तऽ लइका भइल सहते ना रहे, आ सहबो करित त इहाँ करवड्या के रहे? के सउरी सम्हारित? तोरा ईया से त कुछु होला ना आ पतोह खातिर ऊ कुछु करबो ना करती। हो सकेला एहूसे कह देले होखस कि – एह घरे लड़का भइल ना सहेला। कवनो अवरी गोतिन दयादिन चाहे छोट ननदो त ना रही, कि सम्हारे आ जइती लोग। एही से ईया माई के नानी घरे पठा देले होइहन, आ हमार जनम नानी घरे भइल होखी। हमार जनम त भइल नानी लगे, बाकी ओह गाँव के हम अपने गाँव ना कह सकीलाँ। उ – तऽ नानी के गाँव घर रहे, जहाँ जनमते हमके जमुआ घर लेलस, तऽ नानी कहीं दूर गाँव से खोजवा के बतख मँगवली, आ ऊ बत्त ख अपना पाँखी के भीतर हमके ढाँक के बइठल तऽ हम बाँच गइलीं। ओह गाँव में सभे हमरा जनम पर शुभ मनवलस। सभे खुश रहे, चाहे उ धगरिन रही, बाहे नाउन–बारिन रही, चाहे घर के दाई–मजूरिन रही, काहे कि नानी ओह सबके दे लेके खुश कर देले रही – तबो उ हमार गाँव ना रहे।

हम बड़ो भइला पर कई बेर नानी के गाँवे जात रहीं। सभे हमके बहुते मानत रहे। भर गाँवे दउर दडर के खेली। भकोला नाना के त कुल लइकन साथै मिल के खूबे रिगाई। उ गाँव त खाली हमरा नानी, मउसी आ मामीए लोगिन से भरल रहे। सभे कहे कि एह बबुनी के जनम एहिजा भइल रहे। बचे के उमीद ना रहे। बाकी देखन कइसन नीक देह धाजा भऽ गइल बा। ओह गाँव के लरिका–सेयान सभे तऽ अपन रहबे कइल, कुकुरो–बिलाय, बानर–लंगूर, गाय–बैल, छेरी–भेंडी,

मुर्गा–मुर्गी आ बर–बाजार कुल्ही पर अपने अधिकार बुझात रहे – काहे कि उ हमरा नानी के गाँव रहे। केहूए के घर–अँगना, बर–बगइचा चाहे खेत–खरिहानो में उछले–कूदे में कवनो डर ना लगे – कुल त नानी के गाँव के रहे। सब ओरी मामा–नाना लोगे भरल रहे, एह से चारो ओरी अपने राज लउकत रहे तबो ओके एक्को बेरी अपन गाँव ना कह सकली।

जनम के कुछ महीना बाद, हम अपना गाँवें पहुँच गइलीं। इहाँ हमार जनम ना भइल रहे, बाकी ई घर हमरा ईया बाबा आ माई बाबूजी के रहे – एही से ई हमार घर आ गाँव कहाइल। हमरा गाँव में कइगो टोला रहे – दक्खिन टोला, उत्तर टोला, अहिर टोला, भर टोला, चमार टोला, कोइरीटोला, सोनारटोला, कोहॉरटोला आ एह कुल टोला के मिलाके – हमार गाँव रहे। एही गाँव में अपन लरिकाई बीते लाग. ल। एहिजा के गड़ही–गुड़हा, नदी–पोखरा, बर–बगइचा, भींटा–डीह, उसर–पलिहर, खेत–खरिहान कुल हमरा के चीन्हत रहन सन। ओह दक्खिन टोला के कुल घरवा के हम 'मउसी' रहीं, काहे कि दिनभर में एक बेरी कुल्ही घरे खेले चाहे घूमें में हम पहुँच जात रहीं। मोका–बे मोका कवनो–कवनो दिदिया, चाची, फुआ, भउजी चाहे ईयाँ सभे से बतियाइयो लेत रहीं। केहू घरे हमार बार झरा जात रहे, तऽ केहू घरे फराको सिया जात रहे। कहीं दीदी लोग के साथे गोटी खेलत रहीं, तऽ कहीं एक्वड़–दुक्कड़। कबो कबो कनिया–पुतरी के बियाह करे के मोका मिले तऽ केकरो दुअरा से फूलपतइ चोरा के ले आ आके पूजा खातिर धऽ देत रहीं, तऽ केहू के दूअरा से अमरुद तुरात रहे, तऽ कहीं से पपीता। लउकी, नेनुआ, सेम इ कुल त सबका घरे चाहे पिछुआरे बोवले रहत रहे, तऽ लुका के कुछ तूरे मे बड़ा मजा आवत रहे। भर टोला दउर–दउर के इ कुल खेल–खेले के समय बार हें तेरह–बरीस ले रहे, ओकरा बाद तऽ एहू गाँव के चाचा, काका, भईया लोग के सोझा बड़ा अदब लेहाज करे के पड़े। ई डर हरदम बनल रहत रहे कि कवनो बगइचा चाहे पोखरा ओरी केहू देखी त घरे जाके कह दी – तऽ चाची, ईया आ माई लोग लागी आँख देखावे। इ कुल घुमे से बरको लोग आ रहन से रहे के कही। माई आ चाची के रटल–रटावल नीयम याद आ आत रहे। कहे लोग कि बेटी–पतोह के रहन–चाल से रहे के चाँही। ई रहन–चाल जा बिगरीतऽ सभे पूछी। अब तोहार उमीर बियाह जोगे भइल जाता। कऽ दिन एह गाँव में घूमे आ ऊँख तूरे के चाहे साग खोटे के सुख उठावे के मोका बा। अब कुछे बरीस में ई गोइड़ा के कुल खेतवा खरिहनवा तोहरा के देखे खातिर तरसत रह जइहन सन्। तू तऽ अब एह गाँव के इज्जत भर रह जइबू।

हम सोचते रह गइली कि का? अब इहो गँउवाँ हमार ना ह का? एक दिन उहो आइल कि जब रोवत–रोवत सबके अँकवार भेंट करत, सभकर गोड़ धरत, चिल्लात, डॅहकत, कुहकत एह गाँव के छोड़ देली, त साँचो बुझाइल कि ना, इहो गाँव हमार ना हऽ। हमरा बाबूजी के साथे साथे सभे लोग कहल कि हम एह गाँव के अमानत रही, एही से ओह गाँव के खूंटा से हमार पगहा खोल के, हमरा ससुरजी के ई लोग धरा दीहल ह ऽ। अब एह ससुरजी के गाँवे हमार गाँव हऽ। अब हम एही घर गाँव में बन्हाइब।

अपना माई के गाँव से बीस बरीस के नाता तूड़ के हम अब अपना गाँवें पहुँच गइलीं। हमार मनवा कबो कहबे ना करे, कि इ नयका घर हमार हऽ। उ तऽ धठर–धउर के अपना माई आ भईया घरे चल जात रहे। ओह सखी–सलेहर के साथे जाके खेले लागत रहे। कबो सबसे झगड़े आ कबो रोवे। एही चलते एह मन के बड़ा मोट आ मजगूत सिक्कड़ में बान्ह के राखे के परल–उ रहे, एगो मरद के पियार, दुलार आ बाँह के फाँस। जब ले एह सिक्कड़ में मन बन्हाइल रहत रहे, तब ले कहे कि इ घर आ गाँव हमार हऽ। कहे के त इ घर हमार रहे तबो एह घर में हमार कवनो अधिकार ना रहे। सब अधिकार तऽ सास, ननद, मरद आ देवर के रहे, तऽ हमार मन मनवे ना करे कि ई हमार घर हऽ। जब घरवे हमार ना रहे, तऽ कइसे कहीं कि–ई हमार गाँव हऽ। माई–बाबूजी के गॅउवाँ के लोगवो कहे – कि उहे तोहार घर हऽ, बाकी हमार बउराह मन इ माने के तइयार ना रहे। कुछ दिन ले एही उलझन में परल रहीं, कि एक दू लरिकन के माई बन गइनी। अब लरिकन के पढ़ावे आ लायक बनावे खातिर एहू घर गाँव के छोड़ के बहरा अपना मरदे के नोकरी पर शहर अइसन गाँव में चल गइनी। उहाँ किराया के घर में रहे लगलीं। अब अपना घर में खयका बनाई आ लरिकन के खियाई। अपना मरद आ लरिकन के सेवा करीं। एह तरे ओही किराया के घर के जवना पर हमार पूरा अधिकार रहे घर कहे लगली–कि इ हमार घर हऽ। अब इ घर आ गाँव नतऽनानी के रहे, न माई–बाबूजी के, आ न तऽ हमरा सास–ससुर के, अब ई घर हमार रहे। एके गाँव कहीं चाहे शहर–उहे हमार रहे।

आज जब मन में इ बिचार उठल कि अपना गाँव के बारे में कुछ कहीं, चाहे लिखीं, तऽ ई हमार मन बिचलित हो गइल, कलम मचले लागल, बाकी सोच ना पवली कि – हमार गाँव कवन रहे? लागता कि भर जिनगी

हम खोजब अपना गाँव के, तबो उ ना मीली। कहेला लोग कि "जिन ढूढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ," तऽ उ पानी कहाँ बा कि हम ओहमें पइठीं, आ हमार गाँव मिल जाव। एह घरी हमरा भर मन संतोष मिलऽता ओह गाना के सुने में जे में गावल गइल बा कि "हम उस देस के बासी हैं, जिस देस में गंगा बहती है।" भर जिनगी के एह धउर में कई गो घर, गाँव शहर आ प्रान्त घूमें के परल, बाकी कवनो हमार ना कहाइल। अब त इहे कहब कि – ई पूरा देसवे न हमार बा जहाँ खुल के चिरई नियर बिचरन करे के मिलऽता। न त एह घुमें में कवनो पासपोर्ट के जरुरत बा, न भीसा के। एही से कहनी हैं कि हमार गाँव कवन हऽ। उत्तर से दक्खिन ले गंगाजी नियर हमहूँ खाली बहल करीलों। अब हम सोचबे ना करब कि हम कवना गाँव के बानी। हैंऽ इ जरुर कहब कि हम एह देस के बासी बानी, इ देसे हमार गाँव बा।

❑❑

❍ जी 2, 207 –ब्लाक–2
गंगा अपार्टमेन्टस
सेक्टर–डी, पाकेट–6,
बसंत कुंज, नई दिल्ली. पि.को.
–110070

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

थाप आ अलाप

जब कबों गाँव–गिरांव के बतकही होले, त बतिये ना ओरात। ओरावहूँ के न चाही। देस के संस्कृति आ संस्कार के जोगावे वाली जर(सोर) गाँवे में नु भेंटाला। गाँवन के प्राण तत्व श्रम हवे। जहवाँ भोरहीं से लोग काम में लागि जाला आ संझा ले लागले रहेला। ओही क्रम में लोगन से मिलल–जुलल, बात–बतकही, हँसी–मजाक करत अपना के श्रम से अलग ना होखे देवेला। गाँव के लोगन के श्रम बस अपनही ले ना होला बलुक सगरी समाज ला होला। समाज के असली झलक अपना संपूर्णता का संगेअजुवो गावें में मिलेला।एही क्रम में हमनी के सहरी समाज का ओरि झाँकल जाव, त उहाँ विद्रुपता आ अहंकारे बेसी लउकेला। एही से संस्कारन के सोत गाँवने के मानल जाला। गाँव, जहवाँ बड़–छोट, अमीर–गरीब आ ऊंच–नीच के गौण मानत अपनइत के अखंड जोत जरते भेंटाला। गाँव में सभे एक दृदोसरा से कवनो ना कवनो रिस्ता–नाता से गुंथाइल भेंटाला। भइया, चच्चा, कक्का,दादा,बाबा,बड़का बाबू , भतीजा आ पोता होखे भा भउजी, चाची,काकी, दादी , आजी, बड़की माई, भतीजीआ पोती जइसन कवनो ना कवनो रिस्ता सम्बोधन ला जरूर भेंटी। सम्बोधन बस बोलही–बतियावे भर के ना होला बलुक ओकर तासीर अपना पद लेखा होला। लोग ठसक का संगे ओह सम्बोधन के जीयबो करेला आ जीयतारो रा खेला।

एही क्रम में हम अब अपना गाँव का ओर चलतानी। आजु के चंदौली जिला आ चकिया तहसील के बरहुआं गाँव, जवन दखिन ओर से विंध्य पर्वत श्रेणी के पसराव घेराइल बा , त सवा–डेढ़ कोस पछिम में करमनासा नदी आ करीब सवा–डेढ़ कोस दखिन–पछिम कोना में लतीफसाह बाँधो अप. ना उपस्थिति के जियतार रखले बा। लतीफसाह बाँध ा का चलते एह छेत्र क जमीन उपजाऊ बाड़ी सन। बाँध से जवन नहरन के जाल निकसल बा ओकरा चलते कुल्हिये फसल इहवाँ उपजेली सन। बरहुआं गाँव के करीब 250–300 बरीस के इतिहास मिलेला। विंध्य के घाटी आ कबों जंगल से भरल–पूरल रहल छेत्र आ अब के हाल ई बा कि कटाई का चलते जंगल बिरान हो चुकल बा।

मंगरौर के 300 बरीस पहिले के राजा दायम खाँ चंद्रभान दुबे के 200 बीघा माफी देके उहाँ बसवले रहने। बतावत चली कि दायम खाँ पहिले जयचंद के राज परिवार से रहने आ जबरी इस्लाम कबूलवा के मुसलमान बना देहल गइलन। चंद्रभान दुबे आ उनुकर दू गो अउर भाई लोग उनुके राजपुरोहित रहलें। तब से अबले चन्द्र्भान दुबे के बरहुआं में 12–13वीं पीढ़ी चल रहल बा आ गाँव में अजुवो ठसक का संगे रह रहल बा। चन्द्र्भान दुबे के आठवीं पीढ़ी , सदाशिव दुबे के सातवीं पीढ़ी आ रामभंजन बाबा के चउथी पीढ़ी हर ममिला में समरिध रहल बा,जवना बिसे में गाँव में चरचा आ बतकही अभियो कबों–कबों होत रहेले। रामभंजन बाबा के चउथी पीढ़ी मने हमरा बाबा लोग के पीढ़ी अपना संगे ढेर रतन लेके आइल रहे। मने हम आजु देवकी नन्दन बाबा के पीढ़ी के बात कर रहल बानी।

अपना परिवार में देवकी बाबा सभे ले बड़ रहलें। उहाँ के राघव बाबा आ अर्जुन बाबा तीन भाई रहलें। देवकी बाबा भर जिनगी अविवाहित रहलें। उहाँ के बियाह ना भइल कि ना कइलें, ई कहल हमरा ला मोसकिल बा। काहें से कि जब उहाँ के गोलोक वासी भइली त हम बहुत छोट रहनी। देवकी बाबा संगीत के सउखिन बेकती रहलें आ उनुका प्रिय वाद्य ढोलक रहे। ओह घरी उनुका लेखा ढोलक बजावे वाला जवार में केहु ना रहे। सवख त अइसन रहे कि अपना बइठका में मंच बनववले रहलें आ खुद बेगर नागा रियाजो करत रहलें। लोग उनुका ढोलक के थाप सुन के पहिचान जात रहे कि देवकी बाबा एह घरी संगत कर रहल बाड़ें। उनुके अलाप अपना ढंग एकदमे अलगा रहल, जवना के मिसाल ना भेंटाले। अपना ढोलक के लेके हरमेसा संजीदा रहे वाला बेकती देवकी बाबा अनथकले कई–कई घंटा ढोलक बजावत रहलें । सुने में त इहाँ तक आवेला कि गवइया लोग थाक जात रहलें बाकिर देवकी बाबा के ताजगी पर कवनो असर ना देखात रहे। लोग कहेला कि उहाँ के बहुते खुसमिजाज आ मजाकिया किसिम के रहलें । कटाक्ष करे मने विंग बोले में मय गाँव में उहाँ के केहू सानी ना रहे।

अपना घर–परिवार आ दयाद लोग खातिर उनुका हिया नेह से भरल रहत रहे। उनुका नेह–छोह के चरचा करत हमरे बाबूजी एगो घटना के जिकिर करल कबों ना भुलालें। हमरे एगो दयाद के जमीन बिकात रहे आ ओकरा के खरीदे ला ढेर लोग चढ़ा–खड़ी कइले रहे। उ जमीन हमरा मोका के जमीन रहे, जवना का चलते बाबूजी के मन ओह जमीन के खरीदे ला बेकल रहे। ई बाति जब देवकी बाबा के पता चलल त उहाँ के बाबूजी के बोला के कहलें कि बचवा राधेश्याम फलनवा आपन जमीन बेचत ह, उ जमीन तहरे मोका के जमीन ह, तूँ ओके ले लेते त ठीक रहत। बाबूजी के इहे इच्छा रहल, बाबूजी उहाँ के कहलें कि चच्चा मिल जाई त हम जरूर ले लेब। बाकिर ओह पर ढेर लोग लागल बा। देवकी बाबा कहलें कि सुन बचवा! अगर उ जमीन बिकाई त उ तोहरे नावे रजिस्टरी होखी। आपन तइयारी राख, हम बात करतानी। उ जमीन बिकल आ बाबूजी के नावही ओकर रजिस्टरी भइल। देवकी बाबा का चलते ई संभव हो सकल, ई कहत बाबूजी के आँख लोरा जाले।अपना परिवार ला समरपित अइसन बेकती आजु का समय में हेरलो मोसकिल होखी।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

समीक्षा/पुस्तक चर्चा

पिया परबोधी के बहाने तुलसी गाथा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी साहित्य में एह घरी रचनात्मकता के प्रवाह अबाध गति से चल रहल बा। कथा,कहानी , कथेतर गद्य,गीत,कविता त खूबे लिखा रहल बा आ छपियो रहल बा। खंड काव्यो कबों–कबों देखा जाला बाकिर भोजपुरी में महाकाव्य के रचना अजुवों अल्पसंख्यक के देहरी से बाहर नइखे निकसल। अइसना में अचके वर्ष 2023 में प्रकाशित जितेंद्र कुमार तिवारी जी के भोजपुरी महाकाव्य 'पिया परबोधी' से साक्षात्कार करे के मोका भेंटाइल । हमरा उमेद बा कि एहर 3–4 बरीस में भोजपुरी के कवनो महाकाव्य प्रकाशन के ड्योढ़ी पर नइखे चहुंपल।अगर कवनो भइलों होखी त हमरा सज्ञान में नइखे। अउर त अउर एह महाकाव्य

के नायक 'महाकवि तुलसी दास जी आ नायिका उहाँ के अर्धांगिनी 'रत्नावली' जी बानी।भोजपुरी महाकाव्य 'पिया परबोधी' छंदबद्ध काव्य रचना बा आ अपना में 8 गो सरग समेटले बा।ई महाकाव्य सोभा. विक विस्तार लेत कबों यथार्थ के धरातल आ कबों काल्पनिक धरातल पर समभाव से उकेरल गइल बा। एह कृति का पहिले जितेंद्र कुमार तिवारी जी एगो महाकाव्य 'पति प्रबोधिनी' अउर कथा काव्य 'चक्रवर्ती' से साहित्य जगत में आपन बरियार उपस्थिति दर्ज करा चुकल बानी। मने रचनाकार के लेखनी अबाध गति चल रहल बा।

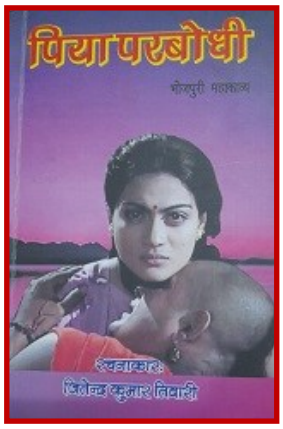

महाकाव्य के सरीर गनेस मंगला चरण से भइल बा। जहवाँ कवि कई गो देवता–देवी लोग के सुमिरन कइले बाड़न। पहिल सरग जवना के 'अवतार सरग' से नामांकित कइल गइल बा । एह सरग में रत्नावली आ तुलसी के बाल अवतरण के बरनन भइल बा। अतने भर ना, ई सरग अपना में तुलसी जनम, पालन–पोषण, माता–पिता आ पालनहार से बिछोह (राम बोला के माई–बाबू के मउवत, पाले पोषे के जीमवारी चुनियाँ नाँव के धाय पर आ रामबोला के उमिर 5–6 बरीस का होते चुनियों के मउवत) आ बाबा नरहरि दास के आश्रम में शिक्षा–दीक्षा के बहुते नीमन से समेटले बा।

दोसरा सरग (सिंगार सरग) में कवि तुलसी दास आ रत्नावली के वियाह आ प्रेम मिलन पर लोकधुन में आपन लेखनी चलवले बाड़ें। रत्नावली आ रामबोला के वियाह , सतपदी, विदाई आ दुल्हिन के ससुरारी में पहिल अगवानी के उछाह से उकेरल गइल बा। देखीं –

'नई बहुरिया अइली घर, में दउरा डेग धराइल
सरधा से कुल–देव देवता, सोखा–बनी पूजाइल
गोतिया के मेहरारू सभे कइलिजा सुरीत
सुघर सीख–सिखवलिजा तूँ , पति से करिहऽ
पिरीत।'

पहिल बेर ससुरार आइल लइकी के अपना पति के लेके ढेर उछाहो रहेला। एही उछाह में आपन सिंगार दृपटार कके पति के जोहेलीं। महाकाव्य के एह सरग में प्रेम अउर संसर्ग के बाति आलंक. ारिक ढंग से सोझा आइल बा–

'अरमा पूरा होई मन के इच्छा सांत नयन के
ढेर दिन के बाद बा आइल पहिला रात मिलन के'

तीसरका सरग (विहार सरग) रत्नावली आ रमबोला के वियाह के बाद के मधुर दिनन के ताना–बाना अंतरंग पल–छिन में होखे वाली बतकही आ ओकरे आनंद से आड़ोलित मन के रेखाचित्र लेके उपस्थित बा। उपमेय आ उपमान के खूब बारिस भइल बा–

'नागपास से जादा,है बरियार नारी भुजपास'

एह सरग में रत्नावली आ तुलसी के आपुसी अनुराग के चित्रांकन मनमोहक बा। बाकिर सरग का अंत में जगदंबा क रत्नावली के दीहल अटल बचन सपना में कलपना क एगो अद्भुत परयोग कवि कइले बाड़न। एही बहाने से भारत के नारी लोग के गुन–गानो भइल बा।

'लागल निद्रा उचट गइल, उमा के देके अटल वचन
दरसन भइल माताराती, तोहरा के कोटि नमन !
जे चाहब रउवा जगदम्बे, उहे दिल से करब हम
दिहल आपन अटल–वचन पर, सारा जीवन रहब हम।'

चउथा सरग (परिहार सरग) में कवि रत्नावली के वचन देहलका के उनुका तियाग का रूप में उकेरले बाड़न। रत्नावली अपना जिनगी के सगरे सुख के तेयाग क देतानी। एह बाति के पुष्टि ला कई गो एतिहासिक तथ्यन के सोझा रा खल गइल बा। कवि रत्नावली के एगो परबोधी नारी का रूप में स्थापित करे में सफल होत देखात बाड़ें। रत्नावली जब तुलसी से ई निहोरा करतानी त उनुका शबद कुछ आउर कह रहल देखात बा–

'पावेला अंजोर कहाँ जे, नाही दिया जरावेला
बइठल कहाँ दलिदर, कबहुँ घर से मार भगावेला
ताबड़तोड़ परिसरम कइला पर अंजाम मिलेला
'हाड़ तुर के मेहनत' कइला पर, ई घर चलेला।'

जब रत्नावली के नइहर में उनुका बाबूजी बेमार हो जात बाड़ें , रत्नावली के भाई के उनुका माई लिया आवे खातिर भेजत बानी। उनुका भाई तुलसी के न रहलो पर रत्नावली के अपना संगे लिया के चल जात बाड़ें , तनिक मनिक ना नुकुर कइला का बाद रत्नावली चलियो जात बाड़ी। जब तुलसी घरे अइले आ रत्ना के घर में ना पवलन। गोतिया परोस से रत्ना के नइहर बेगर अनुमति जाये क समाचार पवलन। तुलसी के मन के भाव कवि के लेखनी से देखे जोग बा–

'लिहलु मतिया हमार ना, बेपानी कइलु
संउसे गतिया हमार,दिलजानी कइलु।'

तुलसी रत्ना से मिले खातिर रातिये में अप. ना ससुरार खातिर निकल गइले ,रसता के काँट–कूस ,बरखा–पानी आ जीवा–जंत से बेपरवाह।रत्ना तुलसी के देख के बिफर गइनी आ

परबोधी रूप अख्तियार करत कहनी–

'दुनियाँ के झूठी माया से, एह हाड़ मास के काया से
नारकी तुच्छ सी नारी से , माल मूत भरे देहधारी से
ई कामुक भाव भूला देतै, अउर राम नाम के गा लेतै,
तऽ तन के बेड़ा तर जाइत,

भवसागर पार उतर जाइत।'

एही का चलते तुलसी के मन में वैराग जाग जाता आ उहाँ के तुलसी से तुलसी दास के राह ध लेत बाड़ें ।

पाँचवाँ सरग (हुंकार सरग)में कवि तुलसी के मन में जागल वैराग के शब्द देले बाड़ें। जब तुलसी ससुरार से लउट के घरे अइलन त आस परोस गाभी सुने आ सहे क दम ना बचल रहे। ई परिस्थिति उनुका पौरुष के जगा देहलस आ तुलसी घर छोड़ कासी जाये क निरनय ले लीहलें। कासी चहुंप के अपना के राम में रमा देहलन।

'हियरा से माया भाग गइल,
वैराग जिया में जाग गइल,
रग–रग में हुंकार भरल,
जियरा में दीपित दीप जरल।
संजोग जवन बा जुट गइल,
सभका से रिस्ता टूट गइल
ना लौट के कबहूँ आवेके,
चल दिहलन राम के पावे के।'

छठवाँ सरग (निहार सरग)में कवि रत्नावली के अपना सुघरई का दम पर तुलसी के मना लेवे के सोच पर पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कइले बाड़ें। दोसरा शब्दन में कहल जाव त नायक के चरित्र के मजगुती देत देखात बाड़ें। रत्नावली के पश्चाताप के संगे ई उमेद रहे कि तुलसी माया में फेर अझुरा जइहें। उनुका बिसवास रहे कि उहाँ के तुलसी के मना लीहें–

'तू रहै खइले कसम, साथ ई निभावे के
हम तै अइनिहै पति,मान के मनावे के'

बाकिर तुलसी रत्नावली के आपन निरनय सुनावत कहलें–

'योग ठनले बानी हम
भोग के भूला दिहनी
छोड़ के माया , दिल
हम राम में लगा लिहलीं ।'

आ संगही इहो कहलें –

'राम पावे में तोहरा
योग के मानल जाई
'पिया परबोधी' नारी
तोहरे के जानल जाई।'

कवि इहवाँ तुलसी से रत्नावली के बहाने नारी के सम्मान बचवे के जुगत में सफल देखात बाड़ें।

सातवाँ सरग(विलाप सरग) रत्नावली के कासी से निरास लउटला के बाद के मनःस्थिति के उकेरल गइल बा। बिरह के मार गहिराह होला, अइसना स्थिति में ओह मार से बाचल रत्नावली खातिर मुमकिन ना हो सकत रहे। रत्नावली के रुदन से ई बाति परिलक्षित हो रहल बा।

'रही–रही बिहरे करेजवा न होऽ ओऽ
अँखिया लोरवा के धारऽ
पूछेला मांगी के सेनुरवा न होऽ
कहवाँ सइयाँ तोहारऽऽ।'

आठवाँ सरग (निस्तार सरग) के सीरी गनेस तेयाग करे वाला लोगन के गुन–गान से भइल बा। प्रेतराज से तुलसी के भेंट आ फेर उनही से हनुमान जी के पता पा के तुलसी क अपने धाम लउटल आ उहाँ राम कथा का बाद हनुमान जी भेंट पाठक के रोमांचित करे में समर्थ देखात बा। ई बरनन एह सरग में जान फूँक रहल बा भा इहो कहल जा सकेला कि सरग के प्राण तत्व बा। हनुमान जी से तुलसी के राम जी से भेंट क अवसर बनत बा आ तुलसी से तुलसी दास के राहि चित्रकूट पहुंचले। उहाँ हनुमान जी के किरपा से राम आ लखन के दरसन भइल। ई स्थिति हनुमान जी के हुलास से भर देत बा। देखीं–

'राम दूत श्री राम भक्त धन, राम रतन के खान
'तुलसी दास' तुलुसी के, बनला से हर्षित हनुमान।'

राम के कृपा से तुलसी दास के भीतरि कविताई के बीज अंकुरित भइल। महादेव के किरपा से तुलसी दास जी अयोध्या में राम नवमी के मेला देखि के 'रामचरित मानस' लिखे क शुरुवात कइलें। दू बरीस, सात महीना आ 26 दिन में 'राम चरित मानस' के रचना पूरा भइल, जवन जन–जन के प्रिय पोथी बनल।

'पिया परबोधी' महाकाव्य श्रिंगार रस में पगल त हइये बा, एहमें धरम–करम के महातिम बतावत, प्रेम आ विरह–वेदना के मनोहारी चित्रण भइल बा।लोकधुन में रचाइल काव्य के भाव पक्ष प्रबल आ पठनीय बा।प्रूफ के त्रुटि ना के बरोबर बा। 'पिया परबोधी' के बहाने भोजपुरी के भंडार में एगो रतन समर्पित करेला जितेंद्र कुमार तिवारी जी के बहुत बहुत बधाई। उमेद बा कि ई पोथी पढ़निहार लोगन के मन के छुवे में सफल होखी।

पुस्तक का नाम–'पिया परबोधी'
कवि– जितेंद्र कुमार तिवारी
प्रकाशन वर्ष –2023
प्रकाशक–उत्कर्ष प्रकाशन, मेरठ कैंट(उ0प्र0)
मूल्य– रु 200-00 मात्र

'❑❑

❍ **बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)**

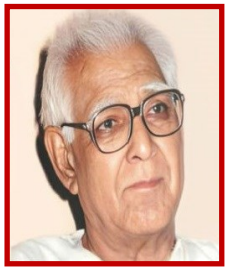

रामदरश मिश्र जी के तीन गो गीत

रामदरश मिश्र

पावस गीत

घेरि–घेरि उठलि घटा घनघोर और कजरार,
सावन आ गइल !
बेबसी के पार ओते, अवरु हम ए पार,
सावन आ गइल !

घिरि अकासे उड़े बदरा, मेंह बरसे छाँह प्यारी ओ !!
जरत बाटी हम तरे कल, क पकड़ के बाँहि, प्यारी ओं !

लड़ति बा चिमनी घटा से, रोज धुआँधार, सावन आ गइल !!
उठति बा मन में तोहें, कजरी पुकारि–पुकारि, प्यारी ओ !

झकर–झकर मसीन लेकिन, देति बा सुर फारि, प्यारी ओ !!
रहे नइखे देति कल से, ई बेदर्द बयार, सावन आ गइल !

खेत में बदमास बदरा, लेत होइहें घेरि, प्यारी ओ !!
छेह पर लुग्गा सुखत होई, तोरे अधफेरि, प्यारी ओ !
पेट जीअत होई पापी, खाइ–खाइ उधार, सावन आ गइल !!

दर्द.गीत

केहू नाही आगे–पीछे,दायें–बायें केहू ना
रमइया रे दिन रात बीते ला उदास ।

घायल हिरिनियाँ सी डहके जिनिगिया
रमइया रे काहें मोही दिनो वनवास ।

सूनी–सूनी धरती भरल अँखिया में बा
रमइया रे खाली–खाली लागेला अकास।

जाने कहाँ चलि गइलें छोड़ी–छोड़ी फुलवा
रमइया रे कंटवा रहेलें आस–पास ।

रोवेके बंसुरिया दरद देखि केहू
रमइया रे लोगवा करेला उपहास ॥

चैता

भाँति–भाँति फुलवा फुलइले हो रामा,
चैत महिनवाँ।

लाल–लाल, पियर–पियर रंग दहकल
बन–उपवन रँग गइले हो रामा,
चैत महिनवाँ।

अमवा मउरि गइलें मह मह बरिया
फुलवन क रस लेके बहके बयरिया
महुआ नशा में बउरइलें हो रामा,
चैत महिनवाँ।

खेतवा में उमड़लि फकल फसिलिया
सोना खानि दमकेले गोहुआँ क बलिया
खुसी में किसान लहरइलें हो रामा,
चैत महिनवाँ।

दिन नाही चैन रात नाही निनियाँ
चुप चुप रोवेले कहेले बिरहिनियाँ
अजहूँ न पिया घरे अइलें हो रामा,
चैत महिनवाँ।

❑❑

उत्तम नगर, नई दिल्ली

अ अपनइत
(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)
अध्यक्ष : सरोज त्यागी संयोजक : जे.पी. द्विवेदी

चिट्ठी के खेला

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

का जमाना आ गयो भाया, करियकी कोटियो चिंता करे लागल बिया। ई सुनि के माथा पर के कई गो रेखा चहल–कदमी करे लगनी सन. ।अपना के ठगाइल महसूसे लगनी सन।अपना हो खला के लेके अझुरहट में आ गइल बाड़ी सन।. अपना देस के सगरे मनईन के माथा के लकीरन के इहे हाल बा। आजु ले सभे इहे जानत मानत रहल ह कि करियका कोट पहिरते कुछ लोगन के चिंता परा जाले आ ओहसे सटे वाला लोगन के सिरे चिंता घहरा जाले। अउर त अउर करियका कोट के फेरा में फँसे वाला लोगन के चिंता चिता अस साले लागेले। बाकिर सुने में त आवता कि एह घरी उलटी बेयार बहि रहल बा। करियकी कोट चिंता करे लागल बा। चिंते तक बात रहित त अउर बात होत बाकिर इहाँ त करियकी कोटिया चिंता के चिट्ठी परोसे लागल बिया। एकाध बेर के बात रहित त तुक्को मान लियात, बाकिर ई तीसरका परोसा सोझा बा। तीसरका परोसा देवेला करियकी कोट का संगे चोंगा पहिरे वाला रिटायर माननीय लोग बा। देख सुन के केकरो माथा ठनक जाई । एकरा से तिवारी बाबा के माथा भिन्नाइल बा त बा।पान लगावसु भा कपार नोचसु, का फरक दोसरा के ।

अब बात उठल बा आ तिवारी बाबा के माथा भिन्नाइल बा त बात हलुक त नहिये होखी । जे भर दुनिया के चूना लगावत बा ओकरा कमतर त नाही बूझे के चाही। तीन के तीनों चिट्ठी बड़का चोंगा वाले मलिकार के लिखाइल बा। लिखला के कारनो जानल जरूरी बा। करियकी कोट जवन कारन चिट्ठी में दीहले बा , उ ई बा कि 'दबाव में न्याय प्रभावित हो रहल बा। ' आ चिंता एह बात के कि एहसे बचला के जरूरत बा। दू बेर के चिट्ठी करियकी कोट का ओर से रहे, मने अलग अलग विचार धारा से जुड़ल लोगन के भाव रहल। करियकी कोट पहिलही से राजनीति से जुड़ल चलल चल आवत बिया त ओकरा के मनमाफिक न्याय मने ओकरे पक्ष के बात ठीक लागी आ एहसे इतर न्याय दबाव में लउकबे करी। जवन करियकी कोट अजुवो राजनीति में ठीक ठाक हस्तक्षेप राखेले, अइसना में पहिलका दुनो चिट्ठियन पर अंगुरी त उठबे करी आ उठबो कइल।

अब रहल तीसरकी चिट्ठी के बात, जवना के रिटायर मलिकार लोग लिखले बा आ जवन एह घरी चरचा में बा। बिचारे जोग बात त ई बा कि चोंगा वाली करियकी कोट के ई बात रिटायर भइला के बाद काहें बुझाइल ? पहिले काहें ना बुझाइल । कुरसी पर रहला पर त ढेर बुझाये के चाहत रहे , बाकिर तब ना बुझाइल । कुरसी रहते बुझला में कवनो परेसानी रहे का ? भा कवनो अउर सोवारथ प्रभावित होत रहे। एहु पर रिटायर मलिकार लोग के आपन लेखनी चलावे के चाहत रहे। बाकिर अइसन नइखे भइल। चिट्ठी से कम बिचारे जोग बात इहो नइखे।

तिवारी बाबा बेर बेर इहे सोच रहल बाड़ें कि अइसन कवन न्याय हो गइल जवन हेतना लोगन के प्रभावित लउकत बा।अब रहल न्याय के प्रभावित कइला भा होखला के बात। ई त हमेसा से होत आ रहल बा। कबों राजनीति से , कबों पइसा आ पहुँच से आ कबों कुछ अउर से लोग प्रभावित करते रहल बा। करिया के उज्जर करे वाला खेला कहाँ सभेले बेसी होला, ई लोगन से छुपल नइखे। ओकरा चाहे करियकी कोट पहिरा दीं भा उजरकी, सभे के सोझा चमकते रहेला। महल, अटारी, नामी, बेनामी धन अइसहीं ना आ जाला। ई धनवाँ त न्याय के प्रभावित भइला से आवेला, ई सभे के पता बा। जगजाहिर बाति पर परदा डालल मने चिट्ठी के खेला । खेलाड़ी त बदलते रहेलन आ मउज करते रहेलन। अब दू चार जाने ससुरारी का चल गइलें, ढेर लोगन के तिरपन सूझे लागल। हमनी के पहिलहूँ तमासाबीन रहनी सन आ अबो उहे हाल बा। रउवा सभे चिट्ठी के एह खेला के देखीं भा खेली, ई रउरे ऊपर बा।

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

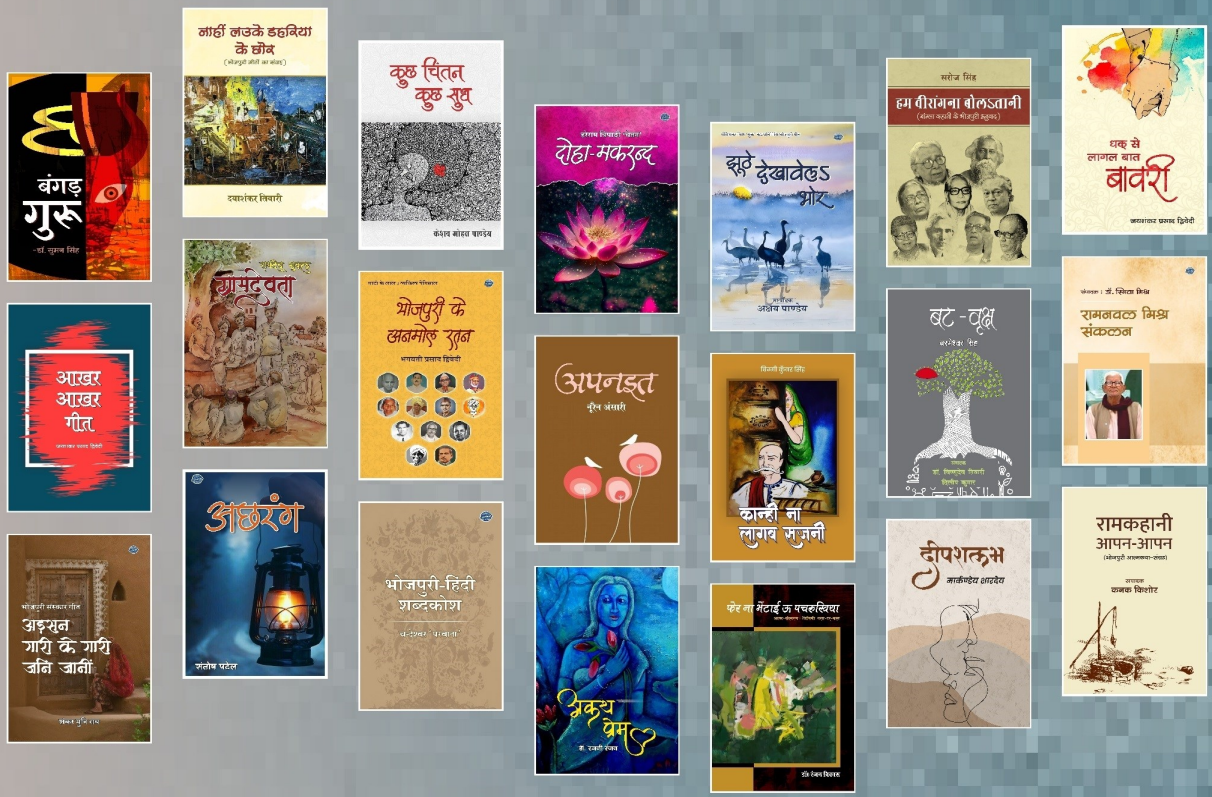

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/- संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।